हिंदी प्रश्न बैंक
स्टुवर्ट स्कूल, कटक
2020-21

व्याकरण (SECTION-A)

निबंध लेखन

किसी भी तरह की पठित सामग्री भाव या विचार को सुनियोजित ढंग से अपनी भाषा में प्रस्तुत करना ही निबंध है।

निबंध के प्रारूप को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

1. प्रारंभ- निबंध का प्रारंभ आकर्षक एवं विषय को स्पष्ट करने वाला होना चाहिए जो पाठक का ध्यान आकर्षित कर सके। आरंभ कविता की पंक्तियों,किसी दृष्टांत,विषय से संबंधित किसी महापुरुष के कथन या विषय को स्पष्ट करने वाले वाक्य से होना चाहिए । आरंभ में, कम शब्दों में पाठक को विषय से अवगत कराने की क्षमता होनी चाहिए।

2. मध्य- इसका सीधा संबंध निबंध के विषय से होता है। यह निबंध का सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है। इस भाग में विषय का विस्तृत वर्णन होता है। इस वर्णन में दृष्टांत,विचारकों एवं साहित्यकारों के श्रेष्ठ कथन, किसी कवि की विषयानुकूल कविता की कुछ पंक्तियां ,कोई शिक्षाप्रद सूत्र या श्लोक की पंक्ति,रामचरितमानस की चौपाइयां आदि सम्मिलित की जा सकती हैं। इसमें मुख्य विषय का विस्तार होने के साथ-साथ विचार या बात का क्रमबद्ध एवं तर्कसंगत वर्णन होना चाहिए।

3. अन्त-निबंध का अंत संक्षिप्त, प्रभावशाली एवं सारगर्भित होना चाहिए। संपूर्ण निबंध के संबंध में लेखक का दृष्टिकोण अंत के कुछ वाक्यों में स्पष्ट होना चाहिए। निबंध का अंत संपूर्ण निबंध की सफलता का आधार है।

परीक्षा उपयोगी निबंध लेखन के कुछ विषय
1. हमारी धरती और बढ़ रहा ग्लोबल वार्मिंग
2. कंप्यूटर एवं मोबाइल फोन आज की आवश्यकता
3. आधुनिक युग में कम हो रहे पुराने संस्कार
4. बढ़ती गर्मी की वजह से जल संकट- एक विकट समस्या
5. देश में बढ़ता भ्रष्टाचार
6. आलस्य-मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु
7."जाको राखे साइयां मार सके ना कोई " इस उक्ति के आधार पर एक कहानी लिखिए।
8. घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाने का अनुभव अपने शब्दों में लिखें।
9. वृक्ष की आत्मकथा लिखें।
10.चित्र देखकर आपके मन में जो विचार आ रहे हैं उन्हें कहानी के रूप में लिखें।

पत्र लेखन (अनौपचारिक)

1. आपकी छोटी बहन पहली बार घर से दूर पाश्चात्य संगीत की शिक्षा के लिए विदेश जा रही है। वह परेशान और दुखी है। उसे समझाते हुए प्रोत्साहित कीजिए।

छात्रावास
दयालबाग शिक्षण संस्थान।
दिनांक 12-7- 2019
प्रिय पिंकी,
सस्नेह आशीर्वाद।
तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ।सर्वप्रथम तुम्हें बहुत-बहुत बधाई, तुम्हें विदेश जाने का अवसर प्राप्त हुआ है। तुम्हें परेशान या दु:खी होने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि तुम अपने लक्ष्य के पथ पर आगे बढ़ रही हो। केवल 2 वर्ष के लिए ही तो परिवार से दूर जा रही हो। कुछ बनने बनने के लिए थोड़ा त्याग तो करना ही पड़ता है। मुझे भी पढ़ाई पूरी कर कुछ बनने के लिए छात्रावास में रहना पड़ रहा है। हमें अपने मां-बाप का नाम रोशन करने के लिए कुछ दिन का उनसे अलगाव सहना ही पड़ेगा। तुम खुशी-खुशी जाओ और अपनी शिक्षा पूर्ण कर नाम कमाओ तथा हम सबका नाम रोशन करो। हम सबकी खुशी इसी में है कि तुम अपने लक्ष्य तक पहुंचो। माताजी व पिताजी को मेरा चरण-स्पर्श कहना।
तुम्हारा अग्रज,
अजय

पत्र लेखन (औपचारिक)

(2) आपकी बैंक पासबुक हो गई है। आप इण्डियन बैंक के मैनेजर को आवेदन- पत्र लिखकर पासबुक की दूसरी प्रति जारी करवाने का अनुरोध करें।

सेवा में,
बैंक मैनेजर,
इण्डियन बैंक,
आगरा।
विषय:दूसरी पास बुक जारी करने हेतु पत्र।
महोदय,
विनम्र निवेदन है कि आपके बैंक में पिछले दस सालों से मेरा खाता है। मेरा खाता क्रमांक 012345 है। मेरी पासबुक खो गई है।
आपसे अनुरोध है कि मेरी पासबुक की दूसरी प्रति जारी करने का कष्ट करें।
धन्यवाद,
भवदीय
तरुण कुमार
15,सरिताविहार, नई दिल्ली।
दिनांक :30-04-2019

अपठित गद्यांश

1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखें।

अपने आपको हर घड़ी और हर पल महान बनाने का नाम वीरता है। वीरता के कारनामे तो एक गौण बात है।असल वीर तो इन कारनामों को अपनी दिनचर्या में लिखते भी नहीं। दरख्त तो जमीन से रस ग्रहण करने में लगा रहता है। उसे यह ख्याल ही नहीं होता कि मुझमे कितने फल या फूल लगेंगे और कब लगेंगे? उसका काम तो अपने आप को सत्य में रखना है; सत्य को अपने अंदर कूट कूट कर भरना है और अंदर ही अंदर बढ़ना है।उसे इस चिंता से क्या मतलब कि कौन मेरे फल खाएगा या मैंने कितने फल लोगों को दिए?
वीरता का विकास नाना प्रकार से होता है। कभी तो उसका विकास लड़ने मरने में, खून बहाने में तलवार-तोप के सामने जान गंवाने में होता है। कभी प्रेम के मैदान में उनका झंडा गड़ा होता है। कभी साहित्य और संगीत से वीरता खिलती है। कभी जीवन के गूढ़ तत्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते हैं। कभी किसी आदर्श पर और कभी किसी पर वीरता फहराती-लहराती है। जब कभी इसका विकास हुआ तभी एक नया कमाल नजर आया, एक नया जमाल पैदा हुआ, एक नई रौनक ,एक नया रंग, एक नई बहार, एक नई प्रभुता संसार में छा गई। वीरता हमेशा निराली और नई होती है। नयापन भी वीरता का एक खास रंग है। वीरता की कमी नकल नहीं हो सकती। जैसे मन की प्रसन्नता कभी कोई उधार नहीं ले सकता। वीरता देश- काल के अनुसार संसार में जब कभी प्रकट हुई, तभी एक नया स्वरूप लेकर आई, जिसके दर्शन करते ही सब लोग चकित हो गए, कुछ बन न पड़ा और वीरता के आगे सिर झुका दिया।

1. वीरता किसे कहते हैं?
उत्तर-अपने आप को हर समय महान बनाने का नाम ही वीरता है।जो व्यक्ति महान कार्य करते हैं, वे वीर होते हैं।

2. वीर लोग अपने कारनामों को क्यों नहीं लिखते?
उत्तर-जिस प्रकार एक वृक्ष पृथ्वी से जल ग्रहण करता रहता है और यह नहीं देखता कि उस पर कितने फल या फूल लगेंगे,उसी प्रकार वीर लोग भी होते हैं जो फल की चिंता ना कर के कर्म में ही लगे रहते हैं।

3. वीरता का विकास किस प्रकार होता है?
उत्तर-वीरता का विकास अनेक प्रकार से होता है। जैसे लड़ने- मरने में, खून बहाने में, तलवार तोप के सामने प्राण देने में,प्रेम के मैदान में, साहित्य और संगीत में, जीवन के गूढ़ तत्व और सत्य की खोज में आदि।

4. वीरता के विकास का क्या परिणाम होता है?
उत्तर-वीरता के विकास में अनोखे कार्य होते हैं और एक अपूर्व सौंदर्य पैदा होता है।नया रंग, बहार व प्रभुता संसार में छा जाती है। वीरता सदैव निराली व नई होती है।

5. लेखक के अनुसार वीरता के क्या लक्षण हैं?
उत्तर-वीरता की कभी नकल नहीं हो सकती, जैसे मन की प्रसन्नता कभी कोई उधार नहीं ले सकता।वीरता सदैव एक नए रूप में प्रकट होती है।वीरता के दर्शन करते ही सब लोग आश्चर्य में पड़ जाते हैं और उसके

सामने सिर झुका देते हैं।

व्यवहारिक हिंदी व्याकरण

सूचना अनुसार शब्द बदलें अथवा वाक्य में परिवर्तन करें।

1. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाएं।
आदमी-आदमियत, इंसान-इंसानियत,अतिथि-आतिथ्य, ईश्वर-ऐश्वर्य,चोर-चोरी,मनुष्य-मनुष्यता, दास-दासता,कृषक-कृषि, बूढ़ा-बुढ़ापा,कारीगर-कारीगरी,प्रतिनिधि-प्रतिनिधित्व, सज्जन-सज्जनता,वानर-वानरत्व, पशु-पशुता,पंडित-पांडित्य,व्यक्ति-व्यक्तित्व,सूजन-सौजन्य, राष्ट्र-राष्ट्रीयता,मित्र-मित्रता,शत्रु-शत्रुता,सेवक-सेवा,साधु-साधुत्व,लड़का-लड़कपन,वीर-वीरता, भाई-भाईचारा, सिंह-सिंहत्व,प्रभु-प्रभुत्व,देव-देवत्व,नारी-नारीत्व,पुरुष-पुरुषत्व, बालक-बालकपन,बच्चा-बचपन,चिकित्सक-चिकित्सा,स्वामी-स्वामित्व

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए।
अनुज-अग्रज,अनाथ-सनाथ,अंधकार-प्रकाश,अनुराग-विराग,अभिमान-नम्रता, अपेक्षा-उपेक्षा,अमावस्या-पूर्णमासी,अल्पायु-दीर्घायु,आधुनिक-प्राचीन,आग्रह-दुराग्रह, आदान-प्रदान,आदर्श-यथार्थ,अपराधी-निरपराधी,आगामी-विगत,आलस्य-स्फूर्ति, आकाश-पाताल,इच्छा-अनिच्छा,इहलोक-परलोक,उग्र-शांत, उदार-संकीर्ण,उत्तम-अनुत्तम, उदात्त-अनुदात्त,उत्कृष्ट-निकृष्ट, उच्च-निम्न,उन्नति-अवनति,उत्तरायण-दक्षिणायन, उद्धत-विनीत, उपयुक्त-अनुपयुक्त,इष्ट-अनिष्ट,उपसर्ग-प्रत्यय,एकत्र-विकीर्ण,एड़ी-चोटी,ऐच्छिक-अनिवार्य

3. निम्नलिखित शब्दों के दो दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।
1. अनिल-हवा, वायु, पवन
2.अमृत -सुधा,सोम, पियूष
3.अग्नि- धावक,आग,अनल
4.अश्व- घोड़ा,हय, घोटक
5.असुर -दानव,राक्षस, दैत्य
6.अध्यापक -गुरु,शिक्षक,आचार्य
7-अंधकार-तम,तिमिर,अंधेरा
8-अतिथि-मेहमान,आगंतुक,अभ्यागत
9-अनुपम-अपूर्व, अतुल,अनोखा
10-अरण्य-वन, जंगल, विपिन
11-अहंकार-अभिमान,घमंड, गर्व
12-आभूषण-गहना,अलंकार,भूषण

4. निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें।
1. जो कहा ना जा सके-अकथनीय
2. जिसके पास कुछ भी ना हो-अकिंचन
3. जिसका वर्णन न किया जा सके-अवर्णनीय

4. जो मांस खाता हो-मांसाहारी
5. जिसे शर्म ना आती हो-निर्लज्ज
6. ग्रहण करने योग्य-ग्राह्य
7. पूजन करने योग्य-पूजनीय
8. जो प्रेम का पात्र हो-प्रिय
9. जो दूसरों की भलाई करता हो-परोपकारी
10. शरण में आया हुआ- शरणागत

5. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण रूप लिखिए।
धर्म-धार्मिक,अर्थ-आर्थिक,समाज-सामाजिक, परिवार-पारिवारिक,नीति-नैतिक, राजनीति-राजनैतिक,इतिहास-ऐतिहासिक,दिन-दैनिक,अंक-अंकित,निंदा-निंदित, जंगल-जंगली,शहर-शहरी,पूजा-पूजनीय,ईर्ष्या-ईर्ष्यालु,विधि-विधिपूर्वक,दुकान-दुकानदार,तीन-तीसरा, निंदा-निंदक,पूजा-पूजक,मृत्यु-मृतक,रेत-रेतीला,सेवा-सेवक,भागना-भगोड़ा, घूमना-घुमक्कड़, लूटना-लूटेरा,बाहर-बाहरी,नीचे-निचला,आगे-अगला,ऊपर-ऊपरी,वह-वैसा,यह-ऐसा, हम-हमारा

6. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।
अचरज-आश्चर्य,आठ-अष्ट,आंख-अक्षि,आग-अग्नि,घर-गृह,जीभ-जिह्वा,दही-दधि,धुआँ-धूम्र, कछुआ-कच्छप,कान-कर्ण, किवाड़-कपाट,कोयल-कोकिल, बूंद-बिंदु,अमी-अमृत, गेहूं-गोधूम

7. सूचना अनुसार वाक्य परिवर्तन करें।

क.वह गन्ना बहुत मीठा है । (मिठास का प्रयोग करें)
उत्तर-उस गन्ने में बहुत मिठास है।

ख.अध्यापक बच्चों को पढ़ाएगा। (वर्तमान काल में बदलिए)
उत्तर-अध्यापक बच्चों को पढ़ाता है।

ग.रोगी सो नहीं पाया। (भाव वाच्य में बदलिए)
उत्तर-रोगी से सोया नहीं गया।

घ. इतनी आयु होने पर भी वह विवाहित नहीं है। (नहीं हटाइए परंतु वाक्य का अर्थ ना बदले)
उत्तर-इतनी आयु होने पर भी वह अविवाहित है।

ङ. उसकी पत्नी अपनी सास से नहीं बोलती। (लिंग बदलकर लिखिए)
उत्तर-उसका पति अपने ससुर से नहीं बोलता।
च. उस लड़की ने आज एक पुस्तक पढ़ी। (वचन बदलिए)
उत्तर-उन लड़कियों ने आज अनेक पुस्तकें पढ़ीं।

छ.मैंने दिल्ली जाना है ।(शुद्ध कीजिए)
उत्तर-मुझे दिल्ली जाना है।

ज."अंधे की लकड़ी" मुहावरे को अपने वाक्य में प्रयोग करो।
उत्तर-श्रवण कुमार अपने माता पिता की अंधे की लकड़ी था।

झ. जैसी करनी वैसी भरनी लोकोक्ति के आधार पर एक वाक्य लिखें ।
उत्तर-नौकर अपने मालिक के घर से ही चोरी करता पकड़ा गया। मालिक ने उसे घर से बाहर निकाल दिया। सच है जैसी करनी वैसी भरनी।

साहित्य सागर गद्य भाग
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए ।

LESSON-7 "संदेह "

1. "भारत के भिन्न भिन्न प्रदेशों में, छोटा-मोटा व्यवसाय, नौकरी और पेट पालने का सुविधाओं को खोजता हुआ जब तुम्हारे घर में आया, तो मुझे विश्वास हुआ कि मैंने घर पाया"।

(क)वक्ता और श्रोता कौन हैं? दोनों का परिचय दीजिए ।
उत्तर-प्रस्तुत कथन का वक्ता रामनिहाल है तथा श्रोता श्यामा है जो एक विधवा स्त्री का आदर्श जीवन जी रही है। रामनिहाल ब्रजकिशोर बाबू के यहां नौकरी करता था और अभी श्यामा के घर रहता है ।

(ख)वक्ता टिक कर एक जगह नौकरी क्यों नहीं कर पाता था? समझा कर लिखिए ।
उत्तर- वक्ता रामनिहाल का स्वभाव था कि वह टिककर एक जगह नौकरी नहीं कर पाता था क्योंकि उसका मन हमेशा विचलित रहता था ।उसकी महत्वाकांक्षा उसे हमेशा एक दूसरी नौकरी करने को कहती थी जहाँ उसे ज्यादा पगार मिल सके।वह हमेशा उच्चाभिलाषी था। इसकी वजह से वह हमेशा नौकरियां छोड़ देता था । घर जैसा वातावरण भी उसे कहीं नहीं मिला था। श्यामा के यहां उसे घर जैसा वातावरण मिला जिससे वह वहां शांतिपूर्वक टिका हुआ था।

(ग)वक्ता को किस प्रकार विश्वास हुआ कि उसने घर पाया? समझा कर लिखिए ।
उत्तर-वक्ता रामनिहाल एक महत्वाकांक्षी युवक था।उसने बहुत से व्यावसायिक स्थानों में नौकरी की थी । जिन जिन के यहां उसने नौकरी की थी वे सभी लोग बड़े ही सुशिक्षित और सज्जन थे। वे रामनिहाल का आदर भी करते थे । लेकिन किसी भी स्थान पर रहते हुए उसे घर जैसा सुख नहीं मिला था। भिन्न भिन्न प्रदेशों में नौकरी और पेट पालने की सुविधाओं को खोजता हुआ जब वह श्यामा के घर आया तो उसके आदर्श तथा संयमित जीवन से अत्यंत प्रभावित हुआ।
रामनिहाल के प्रति श्यामा के स्नेहपूर्ण व्यवहार ने मानो उसके हृदय की रिक्तता की रिक्तता को भर दिया और उसे विश्वास हुआ कि उसे घर मिला मिल गया है।

(घ)शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
उत्तर-'संदेह' कहानी का शीर्षक जिज्ञासापूर्ण है। कहानी का आरंभ रामनिहाल द्वारा अपने बिखरे हुए सामान को समेटने से होता है। उसके हाथ में एक चित्र है। पाठकों के मन में जिज्ञासा उठने लगती है कि रामनिहाल कौन है, उसके हाथ में किसका चित्र है, वह अपना सामान क्यों समेट रहा है ? श्यामा,जिसके यहां वह रहता है, एक विधवा,दयालु व सच्चरित्रा स्त्री है।
रामनिहाल उसे पटना से आए मनोरमा के पत्रों तथा निमंत्रण के बारे में बताता है। बस यहीं से शीर्षक स्पष्ट होने लगता है ।
जिन ब्रजकिशोर के यहां वह काम करता था, मोहन बाबू उनके संबंधी थे। मनोरमा उनकी पत्नी है। मोहन बाबू को लगता है कि उन्हें संसार में बहुत धोखा मिला है, इस कारण उनका व्यवहार कुछ असामान्य सा हो गया है।उन्हें संदेह ही नहीं पूरा यकीन है कि ब्रजकिशोर उन्हें पागल घोषित करके उनकी सम्पत्ति को हड़पना चाहते हैं। मोहन बाबू ने चाहते हुए भी मनोरमा पर संदेह करते हैं कि वह भी ब्रजकिशोर से मिली हुई है।
मनोरमा के रामनिहाल से सहायता मांगने पर रामनिहाल को संदेह होता है कि शायद मनोरमा उसे चाहने लगी है।अंत में श्यामा को रामनिहाल के हाथ में एक चित्र देखकर संदेह होता है कि रामनिहाल मनोरमा को चाहने लगा है और उसके हाथ में उसी का चित्र है । लेकिन उसके स्थान पर अपना चित्र देखकर वह आश्चर्यचकित हो जाती है। वह रामनिहाल को समझाते हुए कहती है कि वह प्रेम के चक्कर में बिल्कुल ना पड़े। हां, जाकर उस दुखिया मनोरमा की मदद कर वापस आ जाए, मनोरमा एक सच्चरित्रा स्त्री है। इस तरह से कहानी का शीर्षक "संदेह" संक्षिप्त, सटीक व उद्देश्यपूर्ण है।

LESSON-9"भेड़ें और भेड़िये"

प्रश्न 3- " मुसीबत में फंसे भेड़िए ने आखिर सियार को अपना गुरु माना और आज्ञा पालन की शपथ ली"।

(क) भेड़िया किस मुसीबत में फ़ंस गया था? सियार ने उसे क्या आश्वासन दिया और क्यों?
उत्तर-भेड़िया जंगल में होने वाले पंचायत के चुनावों की बात को सुनकर चिंतित था क्योंकि उसे यह लग रहा था कि वन प्रदेश में यदि नई सरकार बन गई तो उनका राज्य चला जाएगा। फिर उन्हें सूखी हड्डियां तक खाने को नहीं मिलेंगी। उसकी बातों को सुनकर सियार ने यह आश्वासन दिया, "आप खिन्न मत होइए सरकार ! एक दिन का समय दीजिए। कल तक कोई योजना बन ही जाएगी , मगर एक बात है। आपको मेरे कहे अनुसार कार्य करना पड़ेगा । " भेड़ियों के साथ साथ यह मुसीबत सियारों की भी थी क्योंकि वे अपने भोजन के लिए भेड़ियों पर निर्भर थे। जब भेड़िया अपना शिकार खा लेता है तब यह सियार हड्डियों में लगे मांस को कुतरकर खाते हैं और हड्डियां चूसते हैं। अतः उन्हें कोई हल तो निकालना ही था।

(ख)भेड़िए ने क्या शपथ ली और क्यों? समझा कर लिखिए।

उत्तर-भेड़िए ने सियार की आज्ञा पालन की शपथ ली क्योंकि भेड़िए को इसके अलावा कोई उपाय सूझ भी नहीं रहा था। भेड़ियों की संख्या बहुत कम थी। भेड़ें और अन्य छोटे पशु नब्बे प्रतिशत थे। वे केवल दस प्रतिशत। ऐसे में किसी योजना के द्वारा ही उन पर विजय पाई जा सकती थी।

(ग)सियार ने भेड़िए की सफलता के लिए क्या योजना बनाई? समझा कर लिखिए।
उत्तर-सियार को भेड़िए के साथ-साथ अपने जीवन की भी चिंता हो रही थी इसलिए उसने यह योजना बनाई कि तीन रंगे सियार तैयार किए जाएंगे जिन्हें चुनाव प्रचार के काम में लगाया जाएगा। पीला वाला सियार विद्वान, विचारक, कवि व लेखक, नीला सियार नेता और पत्रकार तथा हरा धर्मगुरु बनकर भेड़ों को मूर्ख बनाने का कार्य करेंगे। बूढ़े सियार को इस बात का पूर्ण विश्वास था कि भेड़े उनके द्वारा बनाई गई इस योजना के द्वारा सहज ही मूर्ख बन जाएंगी।

(घ)'भेड़ें और भेड़िए' नामक कहानी में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-भेड़ें और भेड़िए एक व्यंग्यात्मक कहानी है। इस कहानी के माध्यम से लेखक हरिशंकर परसाई जी ने विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से आज के बेईमान नेताओं पर करारा व्यंग्य किया है जो चुनाव में खड़े होकर भोली-भाली जनता को अपनी चतुराई से मूर्ख बनाते हैं, उनसे बड़े बड़े झूठे वायदे करते हैं और जब भोली-भाली जनता उनकी मीठी मीठी बातों में आ जाती है और उन्हें वोट दे देती है तो फिर सत्ताधारी जनता की भलाई के कार्य करने के बदले अपनी जेबें भरने में लग जाते हैं। इस प्रकार लेखक ने लोकतांत्रिक प्रणाली पर तीखा व्यंग्य किया है।

साहित्य सागर पद्य भाग
निम्नलिखित अवतरणों को पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए।

LESSON-7"विनय के पद"

प्रश्न 1-" ऐसो को उदार जग माहीं।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं ।।
जो गति जोग विराग जतन करि नहीं पावत मुनि ज्ञानी ।
सो गति देत गीध सबरी कहूं प्रभु ना बहुत जिय जानी ।।
जो संपत्ति दस सीस अरप करि रावण शिव पहं लीन्हीं।
सो संपदा विभीषण कहं अति सकुच सहित प्रभु दीन्हीं।।

तुलसीदास सब भांति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो ।
तो भजो राम काम सब पूरन कर कृपानिधि तेरो।। "

(क)प्रस्तुत पद के कवि कौन हैं? वह किसके उपासक थे तथा किस प्रकार की भक्ति को महत्व देते थे?
उत्तर-प्रस्तुत पद के कवि श्री तुलसीदास जी हैं।तुलसीदास जी अयोध्यावासी दशरथ पुत्र श्री राम के उपासक थे ।वे अपने राम को स्वामी और स्वयं को उनका दास मानते थे इसलिए उनकी भक्ति दास्य भाव की भक्ति कही जाती है। कवि का यह मानना है कि यदि मनुष्य संसार के जन्म-मृत्यु के बंधन से पार उतरना चाहता है तो उसे राम की भक्ति का सहारा लेना ही होगा।

(ख)'ऐसो को उदार जग माहीं' से कवि का क्या तात्पर्य है?कवि ने किसे उदार कहा है और क्यों?
उत्तर-कवि कहना चाहते हैं कि भगवान श्री राम जैसा उदार और दयावान व्यक्ति इस संसार में दूसरा और कोई नहीं है।प्रभु श्री राम अत्यंत दयालु एवं कृपालु हैं और बिना किसी प्रकार की सेवा के भी वह दीन दुखियों पर अपनी कृपा करते हैं।

(ग)गीध और शबरी को किसने, कौन सा स्थान दिया और क्यों?
उत्तर-गिद्ध अर्थात जटायु के आत्म त्याग और सबरी अर्थात शबर जात की स्त्री की भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान राम ने उन्हें परम पद दिया। जटायु ने सीता की रक्षा करने में अपने प्राणों की परवाह नहीं की थी इसलिए श्रीराम ने उन्हें अपने पिता का स्थान दिया एवं उनका दाह संस्कार किया तथा शबरी ने बड़े भोलेपन से प्रेम पूर्वक राम को अपने द्वारा चखे हुए मीठे बेर खिलाए थे जिन्हें बिना किसी संकोच के श्रीराम ने खा लिए थे।

(घ)' दस सीस ' का यहां क्या संदर्भ है? समझा कर लिखिए।
उत्तर-' दस सीस ' का शाब्दिक अर्थ है है दस सिर। यहां पर इसका प्रयोग लंकापति रावण के लिए किया गया है। कहा जाता है कि रावण के दस सिर एवं बीस भुजाएं थीं। रावण भगवान शिव का परम भक्त था। अपने आराध्य देव को प्रसन्न करने के लिए उसने अपने दसों सिरों को एक-एक करके शिव जी के चरणों में अर्पित कर दिए थे। रावण के सिर अर्पित करने के उपरांत शिव जी की कृपा से उसके सिर स्वाभाविक रूप से फिर से जुड़ जाते थे। भक्त सदैव अपनी प्रिय वस्तु भगवान को अर्पित करना चाहता है इसलिए रावण ने भी शिवजी को प्रसन्न करने के लिए इतना बड़ा त्याग किया था।

(ङ)भगवान शिव से रावण को संपत्ति के रूप में क्या-क्या प्राप्त हुआ?
उत्तर-रावण की तपस्या एवं उसके महान त्याग से भोलेनाथ शिव अत्यंत प्रसन्न हो गए। उन्होंने रावण को यश, वैभव एवं अतुल संपदा का स्वामी बना दिया । रावण की इच्छा के अनुसार उन्होंने उसे यह भी वरदान दिया कि वह तीनों लोकों(स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक तथा पाताल लोक) में अजेय हो जाए । उसे कोई भी जाति परास्त ना कर सके। मनुष्य का तो उसे कोई भी भय न था। शिवजी से इच्छित वरदान पाकर वह अभिमानी हो गया और सोने की लंका जो कि समुद्र की चारदीवारी से गिरी थी, का महाराजा बनकर तीनों लोकों पर राज करने लगा। इस प्रकार शिवजी को प्रसन्न कर रावण अपार संपदा का स्वामी बन गया था।

(च)भगवान राम ने विभीषण के प्रति किस प्रकार उदारता दिखाई?

उत्तर-विभीषण रावण का छोटा भाई था वह श्रीराम का भक्त था अतः उसने राम और रावण के संघर्ष में श्री राम का पक्ष लिया रावण की पराजय के पश्चात श्री राम ने उसकी सारी की सारी अपार संपत्ति अत्यंत विनम्र भाव से विभीषण को सौंप दी। इससे श्री राम की शालीनता वह भक्त- वत्सलता प्रकट होती है जिसके लिए तुलसीदास ने उनकी प्रशंसा की है।

प्रश्न 2- "जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजिए ताहि कोटि वैरी सम जद्पि परम स्नेही।।

तज्यो पिता प्रहलाद विभीषण बन्धु भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रज बनितन्हि, भए मुद मंगलकारी।।
नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्यव्य जहां लो।
अंजन कहा आप जेहि फूटे बहु तक कहौं कहाँ लो ।।
तुलसी सो सब भांति परमहित पूज्य प्राण ते प्यारो ।
जासों होय सनेह राम-पद , एतो मतो हमारो।।

(क)'राम'और 'वैदेही' शब्द किन के लिए प्रयुक्त किए गए हैं? उनके विषय में संक्षेप में लिखिए।
उत्तर-'राम'अर्थात श्री राम,अयोध्या पति राजा दशरथ एवं महारानी कौशल्या के ज्येष्ठ पुत्र थे। वह स्वभाव से ही विनम्र, करुणामय,सदाचारी एवं आदर्श युवा थे। उनका विवाह जनक नंदिनी सीता से हुआ था अपने पिता एवं माता कैकई के वचनों का पालन करने के लिए वह चौदह वर्ष वनवास में रहे।वहां पर रावण ने धोखे से सीता जी का हरण कर लिया।तब श्री राम ने हनुमान जी, सुग्रीव ,जामवंत आदि की सहायता से रावण का वध कर डाला।
'वैदेही'शब्द सीता जी के लिए प्रयुक्त किया गया है। वैदेही अर्थात विदेह, राजा जनक की पुत्री सीता।कहा जाता है कि उनका जन्म धरती से हुआ था इसलिए उन्हें भूमिका भी कहते हैं। धनुष यज्ञ में श्री राम के द्वारा शिवजी का धनुष भंग किए जाने पर उनका विवाह श्री राम के साथ हुआ था।

(ख) प्रस्तुत पद में तुलसीदास किन्हे त्यागने के लिए कह रहे हैं और क्यों?
उत्तर-प्रस्तुत पद में कवि तुलसीदास जी ऐसे व्यक्तियों का साथ त्यागने की सलाह दे रहे हैं जो सीता जी तथा रामचंद्र जी को अपना प्रिय नहीं मानते हैं। जिस तरह राम भक्ति के कारण विभीषण ने अपने भाई रावण का तथा भरत ने अपनी माता कैकई का साथ छोड़ दिया था उसी प्रकार सभी को श्री राम की शरण में जाना चाहिए। कवि राम के अनन्य भक्त हैं। उनके अनुसार केवल राम का नाम ही है जो हमें भवसागर के पार उतार सकता है।

(ग)'नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहां लो' पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-'नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहां लो' पंक्ति का अर्थ यह है कि जो राम से नाता रखता है अर्थात प्रभु श्री राम की भक्ति करता है वही व्यक्ति हमारा प्रिय और सुहृदय होना चाहिए। तुलसीदास जी का कहना है कि ऐसे अंजन को लगाने से क्या फायदा जो आंख ही फोड़ दे अर्थात उस व्यक्ति को अपना मित्र बनाने से क्या फायदा जो हमारा जीवन ही बर्बाद कर दे।

(घ)निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए ।
सुहृद, सुसेव्य,अंजन, सनेह
उत्तर-सुहृद- संबंधी, प्रियजन
सुसेव्य- आराधना करने योग्य
अंजन- सुरमा, काजल
सनेह- प्रेम

(ङ)प्रस्तुत पद का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर-तुलसीदास जी कहते हैं कि राम-सीता से प्रेम न करने वाले व्यक्ति से हमें अपने संबंध तोड़ देने चाहिए। यहां कवि ने प्रहलाद, विभीषण, भरत तथा ब्रजनारियों के उदाहरण दिए हैं। हमें राम से प्रेम करना चाहिए इसी में हमारी भलाई है।

LESSON-8"भिक्षुक''

प्रश्न 3- " वह आता-
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता ।
पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को
मुंहफटी पुरानी झोली को फैलाता-
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।"

(क) दो टूक कलेजे के करता से कवि का क्या तात्पर्य है? समझा कर लिखिए।
उत्तर-'दो टूक कलेजे के करता 'से कवि का तात्पर्य उस भिखारी द्वारा अपना मन छोटा कर देना है । वह अपनी दयनीय अवस्था को सोचकर अत्यंत दुखी हो जाता है। कवि भी उसको देखकर उदास हो जाते हैं। जब वह भिखारी भोजन पाने के लिए अपनी फटी झोली फैलाए लोगों की ओर याचनामयी दृष्टि से देखता हुआ एक गली से दूसरी गली की ओर जाता है तो वह अंदर ही अंदर टूट जाता है। वह अपने भाग्य पर पछताता है।उसे देखकर कवि का ह्रदय भी आहत हो जाता है।

(ख)'लकुटिया टेक' से क्या तात्पर्य है?लकुटिया टेक कर कौन चल रहा है और क्यों ?
उत्तर-लकुटिया टेक से तात्पर्य है -लाठी का सहारा लेना ।लाठी का सहारा लेकर एक भिखारी चल रहा है। वह बहुत ही दुर्बल एवं अशक्त हो गया है। कई दिनों से भूखा होने के कारण वह चलने में भी असमर्थ है इसलिए वह लाठी का सहारा लेकर चल रहा है।

(ग)"पेट पेट दोनों मिलकर हैं एक" पंक्ति से क्या तात्पर्य है?
उत्तर-"पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक"पंक्ति से तात्पर्य है कि भिक्षुक कई दिनों से भूखा है इसलिए उसका खाली पेट पीठ से मिला हुआ प्रतीत होता है।

(घ)भिखारी क्यों पछताता हुआ आ रहा है ?
उत्तर-भिखारी भूख के कारण बहुत कमजोर हो गया है ।कोई भी उसे अन्न का एक दाना भी नहीं दे रहा है। वह अपनी इस दयनीय स्थिति पर दुख व्यक्त करता हुआ पछताता हुआ चला रहा है। साथ ही उसका परिवार भी है। अपने परिवार का लालन पालन करना उसकी ज़िम्मेदारी है जिसमें वह असमर्थ है । इन्हीं सब कारणों से भी वह पछता रहा है।

LESSON-9"चलना हमारा काम है"

प्रश्न 4."कुछ कह लिया,कुछ सुन लिया
कुछ बोल अपना बंट गया
अच्छा हुआ तुम मिल गईं
कुछ रास्ता ही कट गया ।
क्या राह में परिचय कहूं ,

राही हमारा नाम है
चलना हमारा काम है।"

(क)'बोझ' शब्द से क्या आशय है? कवि इस बोझ को किस तरह बांटना चाहते हैं?
उत्तर-वह शब्द का अर्थ है- 'भार'। हमारे सिर, कंधों अथवा पीठ पर रखा गया बोझ हमें थकान का आभास कराता है। यहां पर 'बोझ' शब्द का अर्थ जीवन के कर्तव्य- मार्ग में आने वाली बाधाओं एवं मुसीबतों से है जो लक्ष्य प्राप्ति में हमारे लिए रुकावट बन जाती हैं।
इस बोझ को कभी दूसरों के साथ मिलजुल कर कम करना चाहते हैं। वह कहते हैं कि जीवन के रास्ते में मिलने वाले यात्रियों के साथ अपने सुख-दुख को साझा करके हम अपने बोझ को हल्का कर सकते हैं। कहा भी गया है कि सुख बांटने से बढ़ते हैं और दुख बांटने से कम हो जाते हैं।

(ख)कवि का रास्ता किस प्रकार कट जाता है? रास्ता कटने का क्या अभिप्राय है?
उत्तर-रास्ता कटने से अभिप्राय आराम से यात्रा करने से है। जब यात्रा आराम से तय होती है, मुसीबतों से कम सामना होता है तब यह कहा जाता है कि रास्ता कट गया।
कवि को भी जब जीवन के पथ पर संगी साथी मिल जाता है तो उसके मिलने से, उसके साथ चलने से और अपना सुख दुख बांटने से, उन दोनों के रास्ते आसान हो जाते हैं।

(ग)कवि उस साथी को अपना परिचय किस प्रकार देते हैं? इससे कवि के विषय में क्या ज्ञात होता है?
उत्तर- कवि अपनी जीवन यात्रा के मार्ग में मिलने वाले उस साथी को अपने परिचय के बारे में कहते हैं कि वह रास्ते में अपना परिचय क्या कह कर अथवा किस प्रकार दें। बस वे उनके बारे में यह जान लें कि उनका नाम 'राही' है क्योंकि वह(कवि) जीवन पथ पर चलने वाले एक मुसाफिर ही तो हैं। कवि की इस बात से उनके विषय में पता चलता है कि वह सरल स्वभाव के हैं।उनके स्वभाव में सादगी होने के साथ-साथ एक तरह की मस्ती भी है। वह बातूनी भी नहीं है ।मार्ग में साथी के मिल जाने पर भी वह न तो रुकते हैं और न ही बातों में लग जाते हैं।अपना संक्षिप्त परिचय देकर वह उसे अपने साथ लेकर पुनः जीवन के पथ पर आगे बढ़ जाते हैं। इससे यह भी ज्ञात होता है कि अपनी यात्रा तथा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह बहुत गंभीर हैं और बिना किसी बाधा के वह उसे पूरा करना चाहते हैं।

(घ)जीवन पथ पर चलने के लिए कवि क्या सुझाव एवं सलाह दे रहे हैं?
उत्तर-जीवन के रास्ते पर चलने के लिए कवि ने हमें अनेक अमूल्य सुझाव दिए हैं।कवि कहते हैं कि जब प्रकृति ने हमारे पैरों में गति दी है तथा हमारे तन और मन में पर्याप्त इच्छाशक्ति दी है तो जीवन पथ पर अपनी मंजिल प्राप्त होने तक हमें निरंतर चलते रहना चाहिए। चाहे कैसा भी अवरोध आए,कहीं किसी स्थान पर नहीं रुकना चाहिए।जब तक हमें =अपनी मंजिल नहीं मिल जाती तब तक हमें रास्ते में विश्राम करने के लिए भी रुकना नहीं चाहिए क्योंकि जीवन निरंतर चलते रहने का दूसरा नाम है।निरंतर चलना ही

हमारा काम है।

(ङ)प्रस्तुत कविता का उद्देश्य लगभग 50 शब्दों में लिखिए।
उत्तर-प्रस्तुत कविता का मुख्य उद्देश्य मानव को विघ्न बाधाओं पर विजय प्राप्त करते हुए निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देना है।कवि के अनुसार गति ही जीवन है।जीवन में सफलता- असफलता, दुख-सुख आते रहते हैं।जीवन की राह में हार-जीत तो लगी रहती है, अतः सभी परिस्थितियों में समभाव रखते हुए हमें निरंतर गतिशील रहना चाहिए क्योंकि चलना हमारा काम है।जीवन एक सफ़र है।मनुष्य को बिना किसी से कोई शिकायत किए सब तरह की परिस्थितियों को ईश्वर की देन समझकर जीवन पथ पर प्रगति की राह पकड़ कर निरंतर चलते रहना चाहिए।

-------------------------*-----------------------------*---------------------------------------

CLASS-10
हिंदी प्रश्न बैंक
स्टुवर्ट स्कूल, कटक
2020-21

व्याकरण (SECTION-A)

निबंध लेखन

किसी भी तरह की पठित सामग्री भाव या विचार को सुनियोजित ढंग से अपनी भाषा में प्रस्तुत करना ही निबंध है।

निबंध के प्रारूप को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

1.प्रारंभ- निबंध का प्रारंभ आकर्षक एवं विषय को स्पष्ट करने वाला होना चाहिए जो पाठक का ध्यान आकर्षित कर सके।आरंभ कविता की पंक्तियों,किसी दृष्टांत,विषय से संबंधित किसी महापुरुष के कथन या विषय को स्पष्ट करने वाले वाक्य से होना चाहिए।आरंभ में, कम शब्दों में पाठक को विषय से अवगत कराने की क्षमता होनी चाहिए।

2.मध्य-इसका सीधा संबंध निबंध के विषय से होता है।यह निबंध का सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है।इस भाग में विषय का विस्तृत वर्णन होता है।इस वर्णन में दृष्टांत,विचारकों एवं साहित्यकारों के श्रेष्ठ कथन, किसी कवि की विषयानुकूल कविता की कुछ पंक्तियां,कोई शिक्षाप्रद सूत्र या श्लोक की पंक्ति,रामचरितमानस की चौपाइयां आदि सम्मिलित की जा सकती हैं।इसमें मुख्य विषय का विस्तार होने के साथ-साथ विचार या बात का क्रमबद्ध एवं तर्कसंगत वर्णन होना चाहिए।

3. अन्त-निबंध का अंत संक्षिप्त, प्रभावशाली एवं सारगर्भित होना चाहिए।संपूर्ण निबंध के संबंध में लेखक का दृष्टिकोण अंत के कुछ वाक्यों में स्पष्ट होना चाहिए।निबंध का अंत संपूर्ण निबंध की सफलता का आधार है।

परीक्षा उपयोगी निबंध लेखन के कुछ विषय

1. हमारी धरती और बढ़ रहा ग्लोबल वार्मिंग
2. कंप्यूटर एवं मोबाइल फोन आज की आवश्यकता
3. आधुनिक युग में कम हो रहे पुराने संस्कार
4. बढ़ती गर्मी की वजह से जल संकट-एक विकट समस्या
5. देश में बढ़ता भ्रष्टाचार
6. आलस्य-मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु
7."जाको राखे साइयां मार सके ना कोई"इस उक्ति के आधार पर एक कहानी लिखिए।
8. घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाने का अनुभव अपने शब्दों में लिखें।
9. वृक्ष की आत्मकथा लिखें।
10.चित्र देखकर आपके मन में जो विचार आ रहे हैं,उन्हें कहानी के रूप में लिखें।
11.आपके स्कूल की तरफ से की गई ट्रैकिंग यात्रा का वर्णन कीजिए।
12.क्या ईश्वर है?विषय के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार उदाहरण सहित दीजिए।
13.रेलवे स्टेशन पर बिताई गई एक रात बताइए कि उस समय आप कहाँ जा रहे थे?आपके साथ कौन-कौन थे और आपका समय किस प्रकार व्यतीत हुआ?
14.मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना-उक्ति के आधार पर एक मौलिक कहानी लिखिए।
15.प्रातःकालीन भ्रमण से क्या-क्या लाभ हैं?क्या आप प्रातः भ्रमण के लिए जाते हैं?बताइए कि प्रात:काल का दृश्य कैसा होता है?
16.कल्पना कीजिए कि आप कौन बनेगा करोड़पति में ₹50000000 जीत गए हैं।उससे आपको कोई तीन कार्य करने हैं।आप कौन कौन से कार्य करेंगे जिससे आप को अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो सके।

पत्र लेखन(अनौपचारिक)

1.आपकी छोटी बहन पहली बार घर से दूर पाश्चात्य संगीत की शिक्षा के लिए विदेश जा रही है।वह परेशान और दुखी है।उसे समझाते हुए प्रोत्साहित कीजिए ।

छात्रावास
दयालबाग शिक्षण संस्थान।
दिनांक -12.7. 2019
प्रिय पिंकी,
सस्नेह आशीर्वाद ।
तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ।सर्वप्रथम तुम्हें बहुत-बहुत बधाई, तुम्हें विदेश जाने का अवसर प्राप्त हुआ है।तुम्हें परेशान या दु:खी होने की आवश्यकता नहीं है।तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि तुम अपने लक्ष्य के पथ पर आगे बढ़ रही हो।केवल 2 वर्ष के लिए ही तो परिवार से दूर जा रही हो।कुछ बनने बनने के लिए थोड़ा त्याग तो करना ही पड़ता है।मुझे भी पढ़ाई पूरी कर कुछ बनने के लिए छात्रावास में रहना पड़ रहा है।हमें अपने मां-बाप का नाम रोशन करने के लिए कुछ दिन का उनसे अलगाव सहना ही पड़ेगा।तुम खुशी-खुशी जाओ और अपनी शिक्षा पूर्ण कर नाम कमाओ तथा हम सबका नाम रोशन करो।हम सबकी खुशी इसी में है कि तुम अपने लक्ष्य तक पहुंचो।माताजी व पिताजी को मेरा चरण-स्पर्श कहना।
तुम्हारा अग्रज,
अजय

पत्र लेखन(औपचारिक)

(2)आपकी बैंक पासबुक हो गई है।आप इण्डियन बैंक के मैनेजर को आवेदन-पत्र लिखकर पासबुक की दूसरी प्रति जारी करवाने का अनुरोध करें।

सेवा में,
बैंक मैनेजर,
इण्डियन बैंक,
आगरा।
विषय:दूसरी पास बुक जारी करने हेतु पत्र।
महोदय,
विनम्र निवेदन है कि आपके बैंक में पिछले दस सालों से मेरा खाता है।मेरा खाता क्रमांक 012345 है।मेरी पासबुक खो गई है। आपसे अनुरोध है कि मेरी पासबुक की दूसरी प्रति जारी करने का कष्ट करें।
धन्यवाद,
भवदीय
तरुण कुमार
15,सरिताविहार,नई दिल्ली।
दिनांक:30-04-2019

अपठित गद्यांश

1.निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखें।

अपने आपको हर घड़ी और हर पल महान बनाने का नाम वीरता है।वीरता के कारनामे तो एक गौण बात है।असल वीर तो इन कारनामों को अपनी दिनचर्या में लिखते भी नहीं।दरख्त तो जमीन से रस ग्रहण करने में लगा रहता है।उसे यह ख्याल ही नहीं होता कि मुझमे कितने फल या फूल लगेंगे और कब लगेंगे? उसका काम तो अपने आप को सत्य में रखना है; सत्य को अपने अंदर कूट कूट कर भरना है और अंदर ही अंदर बढ़ना है।उसे इस चिंता से क्या मतलब कि कौन मेरे फल खाएगा या मैंने कितने फल लोगों को दिए?
वीरता का विकास नाना प्रकार से होता है।कभी तो उसका विकास लड़ने मरने में, खून बहाने में तलवार-तोप के सामने जान गंवाने में होता है।कभी प्रेम के मैदान में उनका झंडा गड़ा होता है।कभी साहित्य और संगीत से वीरता खिलती है।कभी जीवन के गूढ़ तत्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते हैं।कभी किसी आदर्श पर और कभी किसी पर

वीरता फहराती-लहराती है।जब कभी इसका विकास हुआ तभी एक नया कमाल नजर आया, एक नया जमाल पैदा हुआ, एक नई रौनक ,एक नया रंग, एक नई बहार, एक नई प्रभुता संसार में छा गई।वीरता हमेशा निराली और नई होती है।नयापन भी वीरता का एक खास रंग है।वीरता की कमी नकल नहीं हो सकती।जैसे मन की प्रसन्नता कभी कोई उधार नहीं ले सकता।वीरता देश-काल के अनुसार संसार में जब कभी प्रकट हुई, तभी एक नया स्वरूप लेकर आई, जिसके दर्शन करते ही सब लोग चकित हो गए, कुछ बन न पड़ा और वीरता के आगे सिर झुका दिया।

1.वीरता किसे कहते हैं?
उत्तर-अपने आप को हर समय महान बनाने का नाम ही वीरता है।जो व्यक्ति महान कार्य करते हैं, वे वीर होते हैं।

2. वीर लोग अपने कारनामों को क्यों नहीं लिखते?
उत्तर-जिस प्रकार एक वृक्ष पृथ्वी से जल ग्रहण करता रहता है और यह नहीं देखता कि उस पर कितने फल या फूल लगेंगे,उसी प्रकार वीर लोग भी होते हैं जो फल की चिंता ना कर के कर्म में ही लगे रहते हैं।

3. वीरता का विकास किस प्रकार होता है?
उत्तर-वीरता का विकास अनेक प्रकार से होता है।जैसे लड़ने- मरने में, खून बहाने में, तलवार तोप के सामने प्राण देने में,प्रेम के मैदान में, साहित्य और संगीत में, जीवन के गूढ़ तत्व और सत्य की खोज में आदि।

4.वीरता के विकास का क्या परिणाम होता है?
उत्तर-वीरता के विकास में अनोखे कार्य होते हैं और एक अपूर्व सौंदर्य पैदा होता है।नया रंग, बहार व प्रभुता संसार में छा जाती है।वीरता सदैव निराली व नई होती है।

5.लेखक के अनुसार वीरता के क्या लक्षण हैं?
उत्तर-वीरता की कभी नकल नहीं हो सकती, जैसे मन की प्रसन्नता कभी कोई उधार नहीं ले सकता।वीरता सदैव एक नए रूप में प्रकट होती है।वीरता के दर्शन करते ही सब लोग आश्चर्य में पड़ जाते हैं और उसके सामने सिर झुका देते हैं।

व्यवहारिक हिंदी व्याकरण

सूचना अनुसार शब्द बदलें अथवा वाक्य में परिवर्तन करें।

1. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाएं।
आदमी-आदमियत, इंसान-इंसानियत,अतिथि-आतिथ्य, ईश्वर-ऐश्वर्य,चोर-चोरी,मनुष्य-मनुष्यता,दास-दासता,कृषक-कृषि, बूढ़ा-बुढ़ापा,कारीगर-कारीगरी,प्रतिनिधि-प्रतिनिधित्व,सज्जन-सज्जनता,वानर-वानरत्व, पशु-पशुता,पंडित-पांडित्य,व्यक्ति-व्यक्तित्व,सूजन-सौजन्य,राष्ट्र-राष्ट्रीयता,मित्र-मित्रता,शत्रु-शत्रुता,सेवक सेवा,साधु-साधुत्व,लड़का-लड़कपन,वीर-वीरता,भाई-भाईचारा, सिंह-सिंहत्व,प्रभु-प्रभुत्व,देव-देवत्व,नारी-नारीत्व,पुरुष-पुरुषत्व,बालक-बालकपन,बच्चा-बचपन,चिकित्सक-चिकित्सा, स्वामी-स्वामित्व

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए।
अनुज-अग्रज,अनाथ-सनाथ,अंधकार-प्रकाश,अनुराग-विराग, अभिमान-नम्रता,अपेक्षा-उपेक्षा,
अमावस्या-पूर्णमासी,अल्पायु-दीर्घायु,आधुनिक-प्राचीन,आग्रह-दुराग्रह,आदान-प्रदान,आदर्श-यथार्थ,
अपराधी-निरपराधी,आगामी-विगत,आलस्य स्फूर्ति, आकाश-पाताल,इच्छा-अनिच्छा,इहलोक-परलोक,
उग्र-शांत, उदार-संकीर्ण,उत्तम-अनुत्तम,उदात्त-अनुदात्त,उत्कृष्ट-निकृष्ट, उच्च-निम्न,उन्नति-अवनति,
उत्तरायण-दक्षिणायन, उद्धत-विनीत, उपयुक्त-अनुपयुक्त,इष्ट-अनिष्ट,उपसर्ग-प्रत्यय,एकत्र-विकीर्ण,
एड़ी-चोटी,ऐच्छिक-अनिवार्य

3. निम्नलिखित शब्दों के दो दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।
1. अनिल -हवा, वायु, पवन
2.अमृत -सुधा ,सोम, पियूष
3.अग्नि- धावक ,आग, अनल

4.अश्व- घोड़ा,हय, घोटक
5.असुर -दानव, राक्षस, दैत्य
6.अध्यापक -गुरु ,शिक्षक ,आचार्य
7-अंधकार -तम, तिमिर ,अंधेरा
8-अतिथि- मेहमान ,आगंतुक ,अभ्यागत
9-अनुपम- अपूर्व, अतुल ,अनोखा
10-अरण्य- वन, जंगल, विपिन
11-अहंकार -अभिमान, घमंड, गर्व
12-आभूषण -गहना,अलंकार, भूषण

4.निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें।
1. जो कहा ना जा सके-अकथनीय
2. जिसके पास कुछ भी ना हो-अकिंचन
3. जिसका वर्णन न किया जा सके -अवर्णनीय
4. जो मांस खाता हो-मांसाहारी
5. जिसे शर्म ना आती हो-निर्लज्ज
6. ग्रहण करने योग्य-ग्राह्य
7. पूजन करने योग्य- पूजनीय
8. जो प्रेम का पात्र हो-प्रिय
9. जो दूसरों की भलाई करता हो-परोपकारी
10. शरण में आया हुआ- शरणागत

5.निम्नलिखित शब्दों के विशेषण रूप लिखिए।
धर्म-धार्मिक ,अर्थ -आर्थिक ,समाज-सामाजिक, परिवार- पारिवारिक,नीति-नैतिक, राजनीति- राजनैतिक,इतिहास-ऐतिहासिक,दिन-दैनिक,अंक-अंकित,निंदा-निंदित,जंगल- जंगली,शहर-शहरी,पूजा-पूजनीय,ईर्ष्या-ईर्ष्यालु,विधि-विधिपूर्वक,दुकान-दुकानदार,तीन-तीसरा, निंदा-निंदक ,पूजा- पूजक,मृत्यु-मृतक,रेत-रेतीला,सेवा -सेवक,भागना- भगोड़ा, घूमना-घुमक्कड़,लूटना-लूटेरा ,बाहर-बाहरी ,नीचे-निचला,आगे अगला,ऊपर-ऊपरी ,वह-वैसा,यह-ऐसा, हम-हमारा

6.निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।
अचरज-आश्चर्य,आठ-अष्ट, आंख-अक्षि, आग-अग्नि,घर-गृह, जीभ- जिह्वा,दही- दधि,धुआँ- धूम्र,कछुआ-कच्छप,कान-कर्ण, किवाड़-कपाट,कोयल-कोकिल, बूंद-बिंदु,अमी-अमृत, गेहूं- गोधूम

7.सूचना अनुसार वाक्य परिवर्तन करें।

क. वह गन्ना बहुत मीठा है । (मिठास का प्रयोग करें)
उत्तर-उस गन्ने में बहुत मिठास है।

ख.अध्यापक बच्चों को पढ़ाएगा। (वर्तमान काल में बदलिए)
उत्तर-अध्यापक बच्चों को पढ़ाता है।

ग.रोगी सो नहीं पाया। (भाव वाच्य में बदलिए)
उत्तर-रोगी से सोया नहीं गया।

घ. इतनी आयु होने पर भी वह विवाहित नहीं है। (नहीं हटाइए परंतु वाक्य का अर्थ ना बदले)
उत्तर-इतनी आयु होने पर भी वह अविवाहित है।

ङ. उसकी पत्नी अपनी सास से नहीं बोलती। (लिंग बदलकर लिखिए)
उत्तर-उसका पति अपने ससुर से नहीं बोलता।

च. उस लड़की ने आज एक पुस्तक पढ़ी। (वचन बदलिए)
उत्तर-उन लड़कियों ने आज अनेक पुस्तकें पढ़ीं।

छ. मैंने दिल्ली जाना है ।(शुद्ध कीजिए)
उत्तर-मुझे दिल्ली जाना है।

ज."अंधे की लकड़ी" मुहावरे को अपने वाक्य में प्रयोग करो।
उत्तर-श्रवण कुमार अपने माता पिता की अंधे की लकड़ी था।

झ. जैसी करनी वैसी भरनी लोकोक्ति के आधार पर एक वाक्य लिखें ।
उत्तर-नौकर अपने मालिक के घर से ही चोरी करता पकड़ा गया। मालिक ने उसे घर से बाहर निकाल दिया। सच है जैसी करनी वैसी भरनी।

साहित्य सागर गद्य भाग

LESSON-1(BAAT ATTHANNI KI)

(प्रश्न 1) " रसीला ने तुरंत अपना अपराध स्वीकार कर लिया । उसने कोई बहाना ना बनाया | चाहता तो कह सकता था कि यह साजिश है |...................... "

(क) रसीला कौन था ? उसका परिचय दीजिए |
उत्तर- रसीला बाबू जगत सिंह का नौकर था | वह एक गरीब आदमी था | उसकी अवस्था बड़ी ही दयनीय और शोचनीय थी क्योंकि उसका वेतन सिर्फ ₹10 था | उसके गांव में उसके बूढ़े पिता ,पत्नी, एक लड़की और दो लड़के थे | उन सब का भार उसी के कंधों पर था | वह अपनी जिम्मेदारियों का एहसास करते हुए अपनी पूरी तनख्वाह गांव भेज देता था | वह अपना हर काम बड़ी ईमानदारी और सच्चाई से करता था | वह बड़ा मेहनती था एवं उसका एक मित्र भी था जिसका नाम रमजान था |

(ख) रसीला का क्या अपराध था ? स्पष्ट कीजिए |
उत्तर- रसीला इंजीनियर बाबू जगत सिंह का वफादार नौकर था | वह घोर आर्थिक संकट से जूझ रहा था क्योंकि उसका वेतन बहुत ही कम था | उसके घर में बच्चे बीमार थे तथा उसके पास घर वालों को भेजने के लिए अधिक रुपए नहीं थे | उसको रुपयों की बहुत आवश्यकता थी | ऐसे समय में उसकी सहायता उसके अभिन्न मित्र रमजान ने की थी | रसीला ने रमजान के रुपए धीरे-धीरे वापस भी कर दिए थे लेकिन अठन्नी अभी भी देनी थी | उसने कर्ज को उतारने के लिए अपने मालिक के हिसाब में हेराफेरी की थी और यही उसका अपराध बन गया था जिसके कारण बाद में जाकर उसे 6 महीने की सजा सुना दी गई |

(ग) ' तुरंत अपराध स्वीकार करने' से आप क्या समझते हैं? उसने ऐसा क्यों किया ? समझा कर लिखिए |
उत्तर- 'तुरंत अपराध स्वीकार करने' से तात्पर्य है तुरंत अपनी गलती को मान लेना | इंजीनियर साहब के नौकर रसीला ने तुरंत अपनी गलती मान ली थी | उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह पेशे से चोर नहीं था | परिस्थितिवश किसी कमजोरी के क्षण में उससे ऐसा हो गया था | इसलिए उसने अपने अपराध को तुरंत स्वीकार कर लिया | वह ऐसा भी जानता था कि उसका अपराध स्वीकार न करने से उसे और भी मार पड़ेगी और उसे जेल भेज दिया जाएगा |

(घ) कहानी को ध्यान में रखते हुए अपने विचार लिखिए कि हमें अपने नौकरों से कैसा व्यवहार करना चाहिए?
उत्तर - 'बात अठन्नी की ' कहानी घर के नौकरों की वफादारी तथा मालिकों की स्वार्थपरता को दर्शाने वाली कहानी है| इसके माध्यम से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपने घर के नौकरों से कैसा व्यवहार करना चाहिए | उनके साथ हमें आत्मीयता पूर्ण व्यवहार करना चाहिए | उनकी भावनाओं की कद्र करनी चाहिए | उनकी मजबूरियों को समझने का प्रयास करना चाहिए | जिस प्रकार इस कहानी में रसीला अपने मालिक से वेतन वृद्धि की प्रार्थना करता है क्योंकि उसकी आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब थी , लेकिन उसके मालिक को इस बात की कोई परवाह नहीं हुई और उन्होंने उसकी कोई मदद नहीं की | जब रसीला अपने मालिक के प्रति इतना वफादार था तो मालिक का भी कर्तव्य बनता था कि वह उसकी सहायता करता और यदि उसने अठन्नी

की हेराफेरी की थी तो रसीला को उसके लिए सजा देने के स्थान पर वह उसकी मजबूरी समझ कर उसकी मदद कर देता या उसे माफ कर देता |

Extra questions(Lesson 1-बात अठन्नी की)

Q-1) 'बात अठन्नी की'कहानी का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखें।
(उत्तर)इस कहानी में लेखक सुदर्शन जी ने गरीब लोगों में सहृदयता,सहयोग की भावना और अपने मालिक के प्रति आदर भावना के गुणों को बताया है।वे अधिक से अधिक काम करके मालिक को प्रसन्न करना चाहते हैं लेकिन मालिक अपने नौकरों पर दया करने में कृपणता दिखाते हैं और उनकी छोटी सी भूल को भी क्षमा नहीं करते।बाबू जगत सिंह रिश्वत लेते हैं। वह अपने नौकर की अठन्नी की बेईमानी को भी क्षमा नहीं करते हैं और उसे पुलिस में दे देते हैं। रसीला और रमज़ान में मित्रता है।रमज़ान रसीला की पैसे से भी मदद कर देता है।अंत में लेखक ने व्यंग्य करते हुए लिखा है-" रात के समय जब हज़ार, पांच सौ के चोर नरम गद्दों पर मीठी नींद ले रहे थे, अठन्नी का चोर जेल की तंग, अंधेरी कोठरी में पछता रहा था।

Q-2) शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिये।
उत्तर-इस कहानी में शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट ही है कि यह कहानी अठन्नी की बात से ही शुरू होती है।इंजीनियर साहब के नौकर को जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के चौकीदार रमज़ान ने उसकी परेशानी में कुछ रुपए दिए थे ताकि उसकी कुछ मदद हो सके। कुछ समय में उसने अपने दोस्त रमज़ान के सारे रुपए लौटा दिए लेकिन अठन्नी बाकी रह गई ।एक दिन इंजीनियर बाबू ने रसीला से पांच रुपए की मिठाई मंगाई तो उसने साढ़े चार रुपए की मिठाई लाकर उन्हें दे दी और बची हुई अठन्नी से अपना कर्ज चुका दिया ।इस अठन्नी की चोरी के लिए उस पर मुकदमा चला और उसे छह महीने की सजा हुई। विषय में अठन्नी को इस तरह के से दर्शाया गया है जैसे वह अठन्नी एक बहुत बड़ी रकम थी जिसे वापस करने के लिए उसने हेराफेरी की और रसीला को छ: महीने की जेल हो गई यानी उसके मालिक और शेख सलीमुद्दीन के लिए यह छोटी-छोटी चोरियां बहुत बड़ा गुनाह थीं लेकिन वे खुद जो गुनाह करते थे उसके लिए कोई सजा नहीं मिलती।

Q-3) रसीला का चरित्र चित्रण कीजिए ।
उत्तर-रसीला एक गरीब श्रेणी का नौकर था और कामकाजी था और हमेशा अपने मालिक का हर काम बड़ी ईमानदारी से करता था। उसके परिवार का बोझ उसी के कंधों पर था। वह इसी कारण कोई खर्चा नहीं करता था अर्थात वह बदखर्चीला नहीं था। वह बड़ा ही जिम्मेदार था। उसने अपने मित्र का सारा पैसा चुका दिया बस गलती यही कर दी कि उसने मालिक के पैसे से अठन्नी की चोरी कर ली क्योंकि उसको अपने मित्र को अठन्नी वापस करनी थी।

Q-4) रसीला को सजा दिलवाने के लिए उसके मालिक ने क्या किया?
उत्तर- रसीला को सजा दिलवाने के लिए उसके मालिक ने पहले तो उसे चांटा मारते हुए यह कहा कि वह उसे उस हलवाई के पास ले जाएगा जहां से उसने मिठाई खरीदी थी। जब वह मिन्नतें करने लगा तब वे उसे सीधा थाने ले गए और वहां पर उन्होंने हवलदार को पांच रुपए दे दिए ताकि वह उसे मारपीट कर मनवा ले। एक अठन्नी की चोरी की सजा दिलवाने के लिए उन्होंने रिश्वत दी और जेल में भिजवा दिया।

Q-5) रमज़ान की आंखों में खून क्यों उतर आया?
उत्तर- अपने मालिक शेख सलीमुद्दीन का फैसला सुनकर रमज़ान की आंखों में खून उतर आया।उसे यह कतई उम्मीद नहीं थी कि एक अठन्नी के लिए उसके मित्र रसीला को इस तरह की छ: महीने की सजा दे दी जाएगी।वह जानता था कि उसके मालिक शेख सलीमुद्दीन और बाबू जगतसिंह दोनों ही रिश्वतखोर थे।वे लोग इतनी रिश्वत लेते थे तो उनके लिए अठन्नी की बात कोई बड़ी नहीं थी।लेकिन अंत में रसीला को कैद हो ही गई।

LESSON -2 (काकी)

(प्रश्न 2) " उस दिन बड़े सवेरे श्यामू की नींद खुली तो देखा कि घर भर में कोहराम मचा हुआ है"|
(क) घर में कोहराम क्यों मचा हुआ था ? श्यामू को क्या लगा?
उत्तर- श्यामू की मां का देहांत हो गया था इसलिए घर में कोहराम मचा हुआ था| श्यामू को लगा कि उसकी मां सफेद कपड़ा ओढ़े हुए जमीन पर सो रही है। यह एक बच्चे के लिए साधारण सी बात थी परंतु वह यह नहीं समझ पा रहा था कि ऐसी भीड़

घर में क्यों थी।

(ख) काकी को ले जाते समय श्यामू ने क्या उपद्रव मचाया?
उत्तर- लोग जब उमा अर्थात श्यामू की मां को उठाकर ले जाने लगे जब श्यामू ने बड़ा उपद्रव मचाया । लोगों के हाथ से छूटकर वह उमा के ऊपर जा गिरा और बोला काकी सो रही है तो उसे कहां लेकर जा रहे हो । वह कुछ भी नहीं समझ पा रहा था । उसने उनको रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन वह उसमें असफ़ल रहा।

(ग) काकी के बारे में उसे क्या बताया गया?क्या उससे सत्य छिपा रहा ?
उत्तर - काकी के बारे में बुद्धिमान लोगों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहां गई है । लेकिन सत्य अधिक दिनों तक छिपा न रह सका । आसपास के अबोध बालकों के मुंह से यह बात प्रकट हो गई कि उसकी मां का देहांत हो गया है और वह राम के पास चली गई है।

(घ) मां के देहांत की खबर सुनने के पश्चात श्यामू का क्या हुआ?
उत्तर- कई दिन लगातार रोते-रोते उसका रोना धीरे-धीरे शांत हो गया पर उसके ह्रदय में शोक जाकर बस गया था । वह हमेशा चुपचाप बैठा आकाश की ओर ताका करता कि शायद उसकी काकी कहीं दिख जाए । वह हमेशा आकाश में यह देखता रहता कि उसकी काकी राम के यहां कहां चली गई है।

Extra questions Lesson 2-काकी

Q-1)'काकी' विषय में शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-इस कहानी का शीर्षक 'काकी' कहानी के अनुरूप ही रखा गया है क्योंकि पूरी कहानी श्यामू की मां काकी के इर्द-गिर्द घूमती है।श्यामू जो इस कहानी का मुख्य पात्र है,वह अपनी मां को बहुत प्यार करता है और उसे प्यार से 'काकी' कहता है। इस प्रकार उसकी मां कहानी 'काकी' का शीर्षक लेकर आगे बढ़ती है।काकी की मृत्यु पर श्यामू बड़ा कोहराम मचाता है कि उसकी काकी को कहां ले जा रहे हैं।जैसे-तैसे उसे शांत किया गया।कुछ दिनों के बाद उसे ज्ञात हुआ कि उसकी मां अर्थात काकी राम के यहां चली गई है।अपनी बाल- बुद्धि के अनुसार उसने एक योजना बनाई कि वह पतंग के द्वारा काकी को राम के यहां नीचे उतारेगा।यहां उसकी मातृ प्रेम की पराकाष्ठा है।

Q-2) श्यामू ने अच्छी-अच्छी दो रस्सियाँ क्यों मंगवाई?
उत्तर- अपनी काकी को राम के यहां से नीचे उतारने के लिए श्यामू ने पतंग से उनको वापस लाने की तरकीब बनाई थी। इसके लिए उसने भोला को अपनी जीजी से पतंग और डोर मंगवाने के लिए कहा था।लेकिन भोला,जो श्यामू से अधिक समझदार था,उसने एक सुझाव दिया कि डोर के टूट जाने का डर होता है इसलिए अगर मोटी रस्सी हो तो सब ठीक हो जाएगा।इसी बात को सुनकर श्यामू रात भर सोचता रहा और बाद में इस निर्णय में पहुंचा कि कहीं रस्सी छोटी न पड़ जाए इसके लिए उसने दो रस्सियाँ मंगा दीं।

Q-3)'काकी' विषय के आधार पर बाल मनोविज्ञान का विश्लेषण कीजिए।
उत्तर-बच्चे बहुत ही भोले-भाले तथा नासमझ होते हैं।वे किसी भी बात से बहुत ही जल्दी प्रसन्न तथा नाराज़ हो जाते हैं।वह शीघ्र ही किसी बात को लेकर चिंतित भी हो जाते हैं।वह बात की गहराई को समझ नहीं पाते हैं इसलिए जब श्यामू आसमान में उड़ती पतंग देखता है तो बहुत ही प्रसन्न हो जाता है और तरह-तरह की कल्पनाएं करने लगता है कि अब वह भी पतंग लेगा।उस पर काकी लिखवाएगा।उसको आसमान में उड़ाएगा।फिर उस पर बैठ कर उसकी मां नीचे उसके पास आ जाएगी।जब भोला मोटी डोर की बात करता है तो वह सोच में पड़ जाता है और उसे भी लगता है कि पतली डोर पर बैठकर तो उसकी काकी डोर टूटने से गिर जाएगी और घायल हो जाएगी और सोचता है कि मोटी डोर मंगवाने के लिए पैसे भी कहां से आएंगे।जबकि भोला और श्यामू दोनों नहीं सोच पाए कि रस्सी से पतंग उड़ेगी ही नहीं।दूसरी तरफ कोई भी आदमी रस्सी में बैठकर नहीं आ सकता।वह अपनी बाल सुलभ प्रवृत्ति के कारण पैसे के लिए चिंतित हो जाता है तथा देर रात तक सो भी नहीं पाता।दूसरे दिन वह पहले दिन वाली तरकीब से अपने पिता के कोट की जेब से एक रुपए निकाल लेता है।

LESSON -3(महायज्ञ का पुरस्कार)

(प्रश्न 3) " सामने वृक्षों का एक कुंज और कुआं देखकर सेठ जी ने विचार किया कि यहां थोड़ी देर रुक कर भोजन और विश्राम कर लेना चाहिए। "

(क)वृक्षों का एक कुंज और कुआं देखकर सेठ जी ने क्या किया और उन्होंने थोड़ी दूर पर क्या देखा?
उत्तर-वृक्षों की छाया और कुआं देखकर सेठ जी ने विचार किया कि विश्राम और भोजन करने के बाद वे आगे चलेंगे। पोटली से लोटा डोर निकाल कर उन्होंने पानी खींचा और हाथ पैर धोए।उसके बाद वह एक लोटा पानी लेकर उस पेड़ के नीचे बैठ गए और खाने के लिए रोटियां निकाल ली । उन्होंने देखा कि थोड़ी दूर पर एक कुत्ता भूख के मारे छटपटा रहा है उसकी अवस्था मरणासन्न है।

(ख) सेठ ने भूखे कुत्ते के साथ क्या उपकार किया ?
उत्तर-सेठ को उस भूखे कुत्ते पर दया आई और उन्होंने एक रोटी उसके सामने डाल दी । रोटी खाने के बाद उस कुत्ते के शरीर में कुछ जान आई । सेठ ने सोचा कि एक और रोटी अगर उसे खिला दूं तो यह चलने फिरने लायक हो जाएगा। कुत्ते की आंखों में कृतज्ञता को देखकर सेठ ने तीसरी रोटी भी उस कुत्ते को खिला दी और अंत में चौथी रोटी को खिलाते हुए सेठ ने पानी पी कर ही काम चला लिया।

(ग) चौथी रोटी खिलाते समय सेठ ने क्या सोचा ?
उत्तर-चौथी रोटी खिलाते समय सेठ जी ने सोचा कि मुझसे अधिक इस कुत्ते को रोटी की आवश्यकता है। मैं तो अपना काम पानी पीकर भी चला लूंगा। इस बेचारे मूक और बेबस जीव को एक रोटी और मिल जाए तो निश्चय ही इस में इतनी ताकत आ जाएगी कि किसी बस्ती तक यह पहुंच सकेगा और अपना जीवन फिर से जी सकेगा।

(घ) सेठ अपने गंतव्य स्थल पर कब पहुंचे ? वहां उनकी किससे और क्या बातें हुई?
उत्तर- दीया जले सेठ कुंदनपुर पहुंच गए। सेठ हवेली पर पहुंचे तो धन्ना सेठ ने उनका स्वागत किया और उनके आने का कारण पूछा। सेठ ने कहा कि वह संकट में हैं अतः अपना एक यज्ञ बेचना चाहते हैं। धन्ना सेठ की पत्नी ने वहां आकर कहा कि वे उनका महायज्ञ खरीदने को तैयार हैं , यज्ञ नहीं । महायज्ञ का नाम सुनकर सेठ को आश्चर्य हुआ क्योंकि उन्होंने तो कोई महायज्ञ किया ही नहीं था।

Extra questions(Lesson 3-महायज्ञ का पुरस्कार)

प्रश्न 1- महायज्ञ का पुरस्कार कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-इस कहानी में लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि किसी भी अच्छे कार्य या पुण्य का फल अवश्य मिलता है। कोई भी परोपकार अथवा पुण्य के लिए किया गया कार्य बेकार नहीं जाता।वह एक प्रकार का यज्ञ है।एक धनी सेठ थे, धर्मपरायण और अत्यंत विनम्र।सेठ ने अनेक यज्ञ किए थे और दान में न जाने कितना धन दीन-दुखियों में बांट दिया था।परंतु दिन पलटे और सेठ के यहां गरीबी आ गई।उन दिनों यज्ञ बेचने की प्रथा थी।सेठ भी अपने यज्ञ बेचने के लिए कुंदनपुर के सेठ के यहां चलने को तैयार हो गए।सेठानी ने रास्ते के लिए चार रोटियां कपड़े में बांधकर सेठ को दे दीं।रास्ते में एक भूखे कुत्ते को देखकर सेठ ने चारों रोटियाँ उसे खिला दीं।फिर वह धन्ना सेठ के यहां कुंदनपुर पहुंचे तो उनकी सेठानी ने उनसे महायज्ञ बेचने को कहा।यज्ञ बेचने आए सेठ ने कुत्ते को रोटियाँ खिलाने को महायज्ञ नहीं समझा और वापस लौट गए।घर आकर शाम को उन्हीं के घर में उन्हें एक बड़ा खजाना मिला जो उनके द्वारा किए गए महायज्ञ का पुरस्कार था।

प्रश्न 2-'महायज्ञ का पुरस्कार' नामक शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- इस कहानी का शीर्षक महायज्ञ का पुरस्कार यथोचित है।सेठ द्वारा एक भूखे कुत्ते को चारों रोटियाँ खिला देना उनका एक बड़ा यज्ञ बन गया था।खुद भूखे रहकर एक भूखे कुत्ते को रोटियाँ खिला कर उसके प्राणों की रक्षा की।यह उनका सबसे बड़ा पुण्य बन गया।कुंदनपुर की सेठानी ने इसी महायज्ञ को खरीदने का प्रस्ताव रखा।सेठ ने वह यज्ञ नहीं बेचा क्योंकि उनके विचार में किसी भूखे को खाना खिला देना कोई यज्ञ नहीं बल्कि मानव-हित कार्य था।लेकिन घर जाकर उनको एक बड़ा खजाना मिल गया जो भगवान के द्वारा उनको दिया गया उस महायज्ञ का पुरस्कार था।

प्रश्न 3-दीया जलाते समय क्या घटना घटी?
उत्तर-रात का अंधकार फैलता जा रहा था।सेठानी उठकर दिया जलाने के लिए दालान में आई तो रास्ते में किसी चीज़ से ठोकर

लगी।संभल कर दिया जलाकर नीचे की ओर देखा कि दहलीज़ के सहारे एक पत्थर ऊंचा हो गया था और उसके बीचों-बीच एक लोहे का कुंदा लगा था।उसे जब उठाया गया तो एक तहखाना मिला जिसमें बहुत सारे हीरे-जवाहरात जगमगा रहे थे।

Lesson-4 (NETAJI KA CHASHMA)

निम्नलिखित अवतरणों को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न-1-"हालदार साहब को हर पन्द्रहवें दिन कंपनी के काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुज़रना पड़ता था।"
(क) हालदार साहब जिस कस्बे से गुजरते थे वह कैसा था?
उत्तर-जिस कस्बे से हालदार साहब गुजरते थे वह बहुत बड़ा नहीं था।जिसे पक्का मकान कहा जा सके वैसे कुछ ही मकान और जिसे बाज़ार कहा जा सके वैसा एक ही बाज़ार था।कस्बे में एक स्कूल लड़कों का और दूसरा स्कूल लड़कियों का,सीमेंट का एक छोटा सा कारखाना,दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक नगरपालिका भी थी जो कुछ ना कुछ काम कस्बे में करवाती रहती थी।

(ख) मुख्य बाजार के मुख्य चौराहे पर किसकी प्रतिमा लगी थी?प्रतिमा बनवाने में क्या दिक्कत आई होगी?
उत्तर-शहर के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगी हुई थी।लगता था देश के अच्छे मूर्तिकारों की जानकारी ना होने पर या उपलब्ध बजट से ज्यादा खर्च होने के अनुमान से या बोर्ड की शासनावधि समाप्त होने की घड़ियों में किसी स्थानीय कलाकार को ही मौका दिया गया होगा।इन्हीं सब दिक्कतों के बीच मूर्ति का निर्माण किया गया होगा।

(ग)मूर्ति कैसी थी और किसने बनाई थी?
उत्तर-नेता जी की मूर्ति संगमरमर की थी।टोपी की नोंक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊंची मूर्ति थी।नेताजी फौजी वर्दी में सुंदर लग रहे थे।मूर्ति को देखते ही उनके जोश- पूर्ण नारे याद आते।"दिल्ली चलो"और "तुम मुझे खून दो,मैं तुम्हें आजादी दूंगा"।मूर्ति कस्बे के हाई स्कूल के इकलौते ड्राइंग मास्टर मोतीलाल ने बनाई थी।

(घ) मूर्ति में क्या कमी थी?
उत्तर-मूर्ति में एक कमी रह गई थी कि बस नेताजी की आंखों पर चश्मा नहीं था।

EXTRA QUESTIONS LESSON 4

1. कैप्टन चश्मे वाला नेता जी की मूर्ति के चश्मे में उलट फेर क्यों करता था?
उत्तर-पान वाले की बातों के आधार पर मालूम हुआ कि चश्मे वाला अपनी छोटी सी दुकान में से गिने चुने फ्रेमों में से एक फ्रेम नेता जी की मूर्ति पर लगा देता था।जब उसके किसी ग्राहक को नेताजी का पहना हुआ चश्मा पसंद आता तो वह उसको वह फ्रेम उतार कर दे देता और नेता जी की मूर्ति को दूसरा चश्मा पहना देता।शायद उसकी आँखों को नेताजी की बिना चश्मे की मूर्ति भाती नहीं थी।

2. जब हालदार साहब को मालूम पड़ा कि मूर्ति पर चश्मा क्यों नहीं है तो उन्होंने अगली बार के लिए क्या निश्चय किया?
उत्तर-जब हालदार साहब को मालूम पड़ा कि मूर्ति पर कोई चश्मा नहीं होगा तो अगली बार के लिए उन्होंने यह निश्चय किया कि अगली बार वह उस कस्बे के चौराहे से गुजरेंगे तो नहीं रुकेंगे क्योंकि सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा तो उसी स्थान पर स्थापित होगी पर उनकी आँखों पर चश्मा नहीं होगा।वह मूर्ति की तरफ देखेंगे भी नहीं और सीधे निकल जाएंगे क्योंकि उन्हें इस बात की सच्चाई मालूम पड़ गई थी कि उनकी मूर्ति पर चश्मा ना होने का क्या कारण था। वे स्वयं भी आहत थे।

3.शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
उत्तर-कहानी के शीर्षक से ही यह बड़ी आसानी से मालूम पड़ता है कि यह कहानी आखिर किसके बारे में है।जैसा कि शीर्षक है,कहानी नेताजी के चश्मे के आसपास ही घूमती रहती है।कभी मूर्ति पर चश्मे का ना होना,कभी दूसरा चश्मा होना, कभी तीसरा चश्मा होना।चश्मा पहनाने का काम एक चश्मे वाला करता है जो कुछ समय बाद नेता जी की मूर्ति से चश्मे बदल देता है।उसकी मृत्यु के बाद यह चश्मे बदलने का सिलसिला बंद हो गया और फिर नेता जी की मूर्ति बिना चश्मे के हो गई।कुछ दिन बाद किसी समझदार व्यक्ति या बच्चे ने नेता जी की मूर्ति के ऊपर सरकंडे का बना हुआ चश्मा पहना दिया।यह कहानी बड़ी रोचक है और चश्मे के बार-बार बदले जाने पर रोचक बनी है।इसलिए शीर्षक पूरी तरह सार्थक है।

Lesson-5 (APNA APNA BHAGYA)

निम्नलिखित अवतरणों को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
प्रश्न-1-"पास की चुंगी की लालटेन के छोटे से प्रकाश व्रत में देखा कोई दस बारह बरस का लड़का होगा"।
(क) बालक कहां से भाग कर आया था और क्यों?
उत्तर-बालक नैनीताल से पंद्रह कोस दूर एक गांव से भाग कर आया था।वहां काम नहीं था और रोटी भी नहीं थी।उसका बाप भूखा रहता था और मारता था।माँ भी भूखी रहती थी और रोती रहती थी।यह लड़का गांव के एक दूसरे लड़के के साथ अपनी रोज़ी-रोटी या पेट भरने के लिए नैनीताल भाग आया।

(ख) लेखक और उसके मित्र उस पहाड़ी बालक को किसके पास ले गए और क्यों?
उत्तर-लेखक और उसके मित्र उस पहाड़ी बालक को अपने एक वकील मित्र के पास ले गए।वकील मित्र को एक नौकर की जरूरत थी,अतः ये लोग चाहते थे कि उस गरीब लड़के को काम मिल जाए और उसका कुछ भला हो जाए।

(ग) उनके वकील मित्र ने उन दोनों की बात क्यों नहीं मानी? उसने अपनी बात के समर्थन में क्या-क्या कहा?
उत्तर-वकील मित्र ने लेखक और उसके मित्र की बात नहीं मानी क्योंकि उसका विचार था कि ये पहाड़ी बालक बड़े शैतान होते हैं।बच्चे-बच्चे में अवगुण छिपे रहते हैं। ये लोग घर से चोरी करके भाग जाते हैं। इसी कारण वकील मित्र ने उसको अपने यहां नौकर नहीं रखा।

(घ) पहाड़ी बालक की मौत का कारण क्या था?
उत्तर- भूखे पेट रहना और भीषण ठंड में एक पेड़ के नीचे बिना या कम कपड़ों के सोना ही पहाड़ी बालक की मौत का कारण था।

EXTRA QUESTIONS LESSON 5

1. इस कहानी को लेखक ने किस उद्देश्य से लिखा है?
उत्तर-श्री'जैनेंद्र कुमार'ने अपना अपना भाग्य कहानी के माध्यम से मानव को उसकी विषम परिस्थितियों के समक्ष कमज़ोर बताया है और इस बात की पुष्टि की है कि मानव परिस्थितियों का दास है और सांसारिक दुख सुख भाग्य-वश होते हैं।कोई भी मनुष्य भाग्य के लिखे को न मिटा सकता है और ना ही आपत्तियों को बांट सकता है।

2. लड़का कौन था?उसके पास कौन सा उपहार किसने छोड़ा था?
उत्तर-लड़का एक निर्धन पहाड़ी लड़का था।उसके मां-बाप दूर एक गांव में रहते थे।वहाँ पर उनके लिए कोई काम नहीं था। अतः भूखे रहकर उन्हें अपना गुज़ारा करना पड़ता था इसलिए वह गाँव से रोज़ी और रोटी की तलाश में नैनीताल भाग आया। किंतु दस वर्ष की अवस्था में ही निष्ठुर काल से उसका सामना हो गया।उसके शरीर पर इस समय काले चिथड़ों की मैली कुचैली कमीज़ और हल्की सी बर्फ की चादर ही शेष रह गई थी।मैली कुचैली कमीज़ और तुषार की हल्की सी चादर ही उसके

लिए उपहार थे।

3.अंत में बालक का क्या हुआ?प्रकृति ने उसके लिए क्या प्रबंध किया?
उत्तर-अंत में वह लड़का भूख और ठंड के प्रकोप से केवल दस वर्ष की आयु में अपनी जीवन यात्रा समाप्त कर गया। प्रकृति ने उस गरीब लड़के के शव को हल्की सी बर्फ़ की चादर से ढक दिया था।लेखक ने बताया है कि प्रकृति ने बर्फ़ का आवरण उसके नंगे शव को दुनिया की बेहयाई से छिपाने के लिए दिया था।

Lesson-6(BADE GHAR KI BETI)

निम्नलिखित अवतरणों को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
प्रश्न-1-"जिस तरह सूखी लकड़ी जल्दी से जल उठती है उसी तरह क्षुधा से बावला मनुष्य ज़रा ज़रा सी बात पर तुनक जाता है।लाल बिहारी को भावज की यह ढिठाई बहुत बुरी मालूम हुई। "

(क) लाल बिहारी कौन था?उसे अपनी भावज की कौन सी बात बुरी लगी?
उत्तर-लाल बिहारी बेनीमाधव सिंह का छोटा बेटा और श्रीकंठ का भाई था ।एक दिन दोपहर के समय वह दो चिड़ियां पकड़ कर लाया और भावज से उन्हें पकाने को कहा।भावज ने घर में जो पाव भर घी था सब मांस में डाल दिया।जब लाल बिहारी खाना खाने बैठा तो दाल में घी न था।पूछने पर भावज ने सब बता दिया कि घी कहां गया।लाल बिहारी को भावज की यही बात बहुत बुरी लगी कि उसे किफ़ायत का ज़रा भी ध्यान नहीं, इस पर वह बहस किए जा रही थी और अपने कार्य को उचित ठहरा रही थी।

(ख) भावज की बात सुनकर उसने उस पर क्या व्यंग्य किया?
उत्तर-भावज की बात सुनकर लाल बिहारी ने यह व्यंग्य किया कि उसके मायके में तो जैसे घी की नदियाँ बहती हैं।

(ग) भावज की कौन सी बात उसके लिए असहनीय हो गई और क्यों?देवर की बात सुनकर उसने क्या उत्तर दिया?
उत्तर-भावज के मुंह से मायके की बड़ाई सुनकर कि वहाँ इतना घी नित्य नाई-कहार खा जाते हैं,लाल बिहारी के लिए असहनीय हो गई ।भावज को खुद से जुबान लड़ाता देखकर थाली पटकता वह बोला कि जी चाहता है कि उनकी जीभ खींच ले।इस पर भावज ने उत्तर दिया कि ऐसे समय में यदि उसके पति होते तो उसको मज़ा चखा देते।

(घ) लाल बिहारी ने अपना गुस्सा किस प्रकार प्रकट किया?
उत्तर-लाल बिहारी ने भावज को खड़ाऊँ दे मारी और यह कहकर आक्रोश प्रकट किया कि जिसके गुमान पर बैठी है वह उनसे निपट लेगा।

EXTRA QUESTIONS LESSON 6

1.आनंदी कौन थी?ठाकुर साहब उसे क्यों चाहते थे?
उत्तर-आनंदी भूप सिंह की चौथी लड़की थी।भूपसिंह उसे बहुत चाहते थे क्योंकि वह अपनी सब बहनों से सुंदर और गुणवती थी।

2.अंत में दोनों भाइयों का मेल किसने कराया?
उत्तर-अंत में श्री कंठ और लाल बिहारी का मेल श्रीकंठ की पत्नी आनंदी ने कराया।उसने लाल बिहारी को घर छोड़कर जाने से

रोक लिया और एक अच्छी नारी होने का फर्ज़ निभाया।

3.बेनीमाधव सिंह ने आनंदी को बड़े घर की बेटी क्यों कहा?
उत्तर-बेनीमाधव सिंह ने आनंदी को बड़े घर की बेटी इसलिए कहा क्योंकि उसने बिगड़े हुए काम को बना लिया था अर्थात दोनों भाइयों को एक छोटी सी बात के लिए अपने दिल को ठोस कर एक दूसरे से अलग होने से बचा लिया था।

LESSON-7("संदेह ")

1."भारत के भिन्न भिन्न प्रदेशों में, छोटा-मोटा व्यवसाय, नौकरी और पेट पालने का सुविधाओं को खोजता हुआ जब तुम्हारे घर में आया, तो मुझे विश्वास हुआ कि मैंने घर पाया"।
(क) वक्ता और श्रोता कौन हैं? दोनों का परिचय दीजिए ।
उत्तर- प्रस्तुत कथन का वक्ता रामनिहाल है तथा श्रोता श्यामा है जो एक विधवा स्त्री का आदर्श जीवन जी रही है। रामनिहाल ब्रजकिशोर बाबू के यहां नौकरी करता था और अभी श्यामा के घर रहता है ।

(ख) वक्ता टिक कर एक जगह नौकरी क्यों नहीं कर पाता था? समझा कर लिखिए ।
उत्तर- वक्ता रामनिहाल का स्वभाव था कि वह टिककर एक जगह नौकरी नहीं कर पाता था क्योंकि उसका मन हमेशा विचलित रहता था ।उसकी महत्वाकांक्षा उसे हमेशा एक दूसरी नौकरी करने को कहती थी जहाँ उसे ज्यादा पगार मिल सके।वह हमेशा उच्चाभिलाषी था। इसकी वजह से वह हमेशा नौकरियां छोड़ देता था । घर जैसा वातावरण भी उसे कहीं नहीं मिला था। श्यामा के यहां उसे घर जैसा वातावरण मिला जिससे वह वहां शांतिपूर्वक टिका हुआ था।

(ग) वक्ता को किस प्रकार विश्वास हुआ कि उसने घर पाया? समझा कर लिखिए ।
उत्तर- वक्ता रामनिहाल एक महत्वाकांक्षी युवक था।उसने बहुत से व्यावसायिक स्थानों में नौकरी की थी । जिन जिन के यहां उसने नौकरी की थी वे सभी लोग बड़े ही सुशिक्षित और सज्जन थे। वे रामनिहाल का आदर भी करते थे । लेकिन किसी भी स्थान पर रहते हुए उसे घर जैसा सुख नहीं मिला था। भिन्न भिन्न प्रदेशों में नौकरी और पेट पालने की सुविधाओं को खोजता हुआ जब वह श्यामा के घर आया तो उसके आदर्श तथा संयमित जीवन से अत्यंत प्रभावित हुआ।रामनिहाल के प्रति श्यामा के स्नेहपूर्ण व्यवहार ने मानो उसके हृदय की रिक्तता की रिक्तता को भर दिया और उसे विश्वास हुआ कि उसे घर मिला मिल गया है।

(घ) शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
उत्तर- 'संदेह' कहानी का शीर्षक जिज्ञासापूर्ण है। कहानी का आरंभ रामनिहाल द्वारा अपने बिखरे हुए सामान को समेटने से होता है। उसके हाथ में एक चित्र है। पाठकों के मन में जिज्ञासा उठने लगती है कि रामनिहाल कौन है, उसके हाथ में किसका चित्र है, वह अपना सामान क्यों समेट रहा है ? श्यामा,जिसके यहां वह रहता है, एक विधवा,दयालु व सच्चरित्रा स्त्री है। रामनिहाल उसे पटना से आए मनोरमा के पत्रों तथा निमंत्रण के बारे में बताता है। बस यहीं से शीर्षक स्पष्ट होने लगता है ।
जिन ब्रजकिशोर के यहां वह काम करता था, मोहन बाबू उनके संबंधी थे। मनोरमा उनकी पत्नी है। मोहन बाबू को लगता है कि उन्हें संसार में बहुत धोखा मिला है, इस कारण उनका व्यवहार कुछ असामान्य सा हो गया है।उन्हें संदेह ही नहीं पूरा यकीन है कि ब्रजकिशोर उन्हें पागल घोषित करके उनकी   सम्पत्ति को हड़पना चाहते हैं। मोहन बाबू ने चाहते हुए भी मनोरमा पर संदेह करते हैं कि वह भी ब्रजकिशोर से मिली हुई है।
मनोरमा के रामनिहाल से सहायता मांगने पर रामनिहाल को संदेह होता है कि शायद मनोरमा उसे चाहने लगी है।अंत में श्यामा को रामनिहाल के हाथ में एक चित्र देखकर संदेह होता है कि रामनिहाल मनोरमा को चाहने लगा है और उसके हाथ में उसी का चित्र है । लेकिन उसके स्थान पर अपना चित्र देखकर वह आश्चर्यचकित हो जाती है। वह रामनिहाल को समझाते हुए कहती है कि वह प्रेम के चक्कर में बिल्कुल ना पड़े। हां, जाकर उस दुखिया मनोरमा की मदद कर वापस आ जाए, मनोरमा एक सच्चरित्रा स्त्री है। इस तरह से कहानी का शीर्षक "संदेह" संक्षिप्त, सटीक व उद्देश्यपूर्ण है।

EXTRA QUESTIONS- LESSON-7 (SANDEH)

(प्रश्न-1) "तनिक सावधान रहिएगा और नाव की बात है" कहकर वक्ता श्रोता से क्या स्पष्ट करना चाहती थी ?उसके मन में छिपे डर का वर्णन कीजिए।
उत्तर-मनोरमा को हर पल यह डर था कि जायदाद के लालच में ब्रजकिशोर उसके पति को पागल सिद्ध कर उन्हें कंगाल ना बना दे।उसके पति भी परिस्थितिवश अशांत से हो गए थे जिसके कारण वह कोई भी गलत कदम उठा सकते थे।उसके मन में सदैव अपने पति की सुरक्षा का ख्याल बना रहता था। वह किसी भी दुर्घटना से उन्हें बचाना चाहती थी इसलिए वह रामनिहाल से नाव में विशेष सावधान रहने का अनुरोध कर रही थी।लेकिन दूसरी तरफ मनोरमा के पति मोहन बाबू को यह शक था कि उसकी पत्नी ब्रजकिशोर बाबू के साथ ही मिली हुई है।

(प्रश्न-2)कहानी के आधार पर मनोरमा का चरित्र चित्रण कीजिए।
उत्तर-मनोरमा एक सच्चरित्र महिला है जो अपने पति से बहुत प्यार करती है।वह बहुत ही समझदार व दूरदर्शी है।वह ब्रजकिशोर के षड्यंत्र को समझ जाती है।उसके पति को उस पर शक है कि वह ब्रजकिशोर के साथ मिली हुई है लेकिन वह हिम्मत नहीं हारती।अपने पति की असामान्य मानसिक अवस्था को सुधारने का भरसक प्रयत्न करती है।उसे इंसान की परख है।वह इस बात को समझ जाती है कि रामनिहाल ही ऐसा विश्वासपात्र तथा समझदार व्यक्ति है जो एक सच्चा मददगार साबित हो सकता है इसलिए उससे पटना आकर अपनी मदद करने के लिए पत्र लिखती है।

(प्रश्न-3)रामनिहाल के अनुसार भगवान की दया से मनुष्य कब और क्यों वंचित हो जाता है?कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-रामनिहाल अपने जीवन के अनुभवों को श्यामा के साथ बांटते हुए कहता है कि भगवान सीधे-साधे,सच्चे व्यक्तियों का ही साथ देते हैं।जब मनुष्य जरूरत से ज्यादा चतुर बनता है या फिर स्वार्थ एवं कपटपूर्ण आचरण करता है तो वह अभागा हो जाता है क्योंकि ऐसा मनुष्य ईश्वर की दया से वंचित हो जाता है।

LESSON -9-भेड़ें और भेड़िये

प्रश्न 3-"मुसीबत में फंसे भेड़िए ने आखिर सियार को अपना गुरु माना और आज्ञा पालन की शपथ ली"।
(क)भेड़िया किस मुसीबत में फ़ंस गया था? सियार ने उसे क्या आश्वासन दिया और क्यों?
उत्तर-भेड़िया जंगल में होने वाले पंचायत के चुनावों की बात को सुनकर चिंतित था क्योंकि उसे यह लग रहा था कि वन प्रदेश में यदि नई सरकार बन गई तो उनका राज्य चला जाएगा। फिर उन्हें सूखी हड्डियां तक खाने को नहीं मिलेंगी। उसकी बातों को सुनकर सियार ने यह आश्वासन दिया, "आप खिन्न मत होइए सरकार ! एक दिन का समय दीजिए। कल तक कोई योजना बन ही जाएगी , मगर एक बात है। आपको मेरे कहे अनुसार कार्य करना पड़ेगा । " भेड़ियों के साथ साथ यह मुसीबत सियारों की भी थी क्योंकि वे अपने भोजन के लिए भेड़ियों पर निर्भर थे। जब भेड़िया अपना शिकार खा लेता है तब यह सियार हड्डियों में लगे मांस को कुतरकर खाते हैं और हड्डियां चूसते हैं। अतः उन्हें कोई हल तो निकालना ही था।

(ख)भेड़िए ने क्या शपथ ली और क्यों? समझा कर लिखिए।

उत्तर- भेड़िए ने सियार की आज्ञा पालन की शपथ ली क्योंकि भेड़िए को इसके अलावा कोई उपाय सूझ भी नहीं रहा था। भेड़ियों की संख्या बहुत कम थी। भेड़ें और अन्य छोटे पशु नब्बे प्रतिशत थे। वे केवल दस प्रतिशत। ऐसे में किसी योजना के द्वारा ही उन पर विजय पाई जा सकती थी।

(ग)सियार ने भेड़िए की सफलता के लिए क्या योजना बनाई? समझा कर लिखिए।
उत्तर-सियार को भेड़िए के साथ-साथ अपने जीवन की भी चिंता हो रही थी इसलिए उसने यह योजना बनाई कि तीन रंगे सियार तैयार किए जाएंगे जिन्हें चुनाव प्रचार के काम में लगाया जाएगा। पीला वाला सियार विद्वान, विचारक, कवि व लेखक, नीला सियार नेता और पत्रकार तथा हरा धर्मगुरु बनकर भेड़ों को मूर्ख बनाने का कार्य करेंगे। बूढ़े सियार को इस बात का पूर्ण विश्वास था कि भेड़े उनके द्वारा बनाई गई इस योजना के द्वारा सहज ही मूर्ख बन जाएंगी।

(घ)'भेड़ें और भेड़िए' नामक कहानी में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- भेड़ें और भेड़िए एक व्यंग्यात्मक कहानी है। इस कहानी के माध्यम से लेखक हरिशंकर परसाई जी ने विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से आज के बेईमान नेताओं पर करारा व्यंग्य किया है जो चुनाव में खड़े होकर भोली-भाली जनता को अपनी चतुराई से

मूर्ख बनाते हैं, उनसे बड़े बड़े झूठे वायदे करते हैं और जब भोली-भाली जनता उनकी मीठी मीठी बातों में आ जाती है और उन्हें वोट दे देती है तो फिर सत्ताधारी जनता की भलाई के कार्य करने के बदले अपनी जेबें भरने में लग जाते हैं। इस प्रकार लेखक ने लोकतांत्रिक प्रणाली पर तीखा व्यंग्य किया है।

EXTRA QUESTIONS LESSON-9 (BHEDEN AUR BHEDIYE)

(प्रश्न-1)बूढ़े सियार ने भेड़िए का रूप किस प्रकार बदला था और क्यों?समझा कर लिखिए।
उत्तर-बूढ़े सियार ने भेड़िए को संत के वेश में भेड़ों के सामने प्रस्तुत किया।उसने भेड़िए के माथे पर तिलक लगा दिया,गले में कंठी पहना दी तथा मुख में घास का तिनका दबवा दिया तथा उसे सिर बिल्कुल नीचे झुका कर रखने के लिए कहा। उसने ऐसा इसलिए किया जिससे वह भेड़ों का विश्वास जीत सके और उनका भेड़ियों के प्रति हृदय परिवर्तन हो जाए।

(प्रश्न-2)बहुमत से क्या तात्पर्य है?चुनाव में किस को बहुमत मिला और क्यों?
उत्तर-बहुमत से अभिप्राय है-अधिक से अधिक की सहमति। यहाँ वन में पंचायत के चुनाव हुए जिसमें बूढ़े सियार ने जो चाल चली थी उसके द्वारा भेड़ें मूर्ख बन गईं तथा अपने भक्षक अर्थात भेड़ियों को ही चुनाव में बहुमत देकर जिता दिया।

(प्रश्न-3)पशु समाज की खुशी का क्या कारण था?उत्तर अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर-पशु समाज में प्रजातंत्र की स्थापना होने की कल्पना से खुशी की लहर दौड़ गई।उनका विचार था कि प्रजातंत्र की स्थापना होने पर सभी की सुख समृद्धि एवं सुरक्षा का पूरा पूरा ध्यान रखा जाएगा।

LESSON 10(DO KALAKAR)

(प्रश्न-1)"आज शाम को स्वयंसेवकों का एक दल जा रहा है, प्रिंसिपल से अनुमति ले ली है।मैं भी उनके साथ ही जा रही हूं। "

(क)कौन किस से किस विषय में बात कर रहा है?स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-यहां अरुणा जो एक समाज सेविका है,अपनी सखी चित्रा से बात कर रही है कि देश में एक स्थान पर बाढ़ आ गई है।वहाँ लोगों को सहायता की आवश्यकता है।अरुणा चित्रा को बता रही है कि वह प्रिंसिपल की अनुमति से एक स्वयंसेवकों के दल के साथ बाढ़ पीड़ितों की सहायता करने जा रही है।चित्रा का सुझाव है कि उसके इम्तिहान नजदीक आ रहे हैं इसलिए उसको अपना समय व्यर्थ के कामों में नहीं लगाना चाहिए।चित्रा ने अरुणा से यह भी कहा कि उसके माता-पिता ने जो पैसा उसकी पढ़ाई में लगाया है,उसे पढ़ाई में ध्यान देकर उसको सार्थक करना चाहिए।

(ख)देश के किसी भी भाग में आपदा की स्थिति उत्पन्न होने पर नागरिकों का क्या कर्तव्य होता है?
उत्तर-देश के किसी भी भाग में आपदा की स्थिति उत्पन्न होने पर नागरिकों का कर्तव्य होता है कि सभी अपनी अपनी क्षमता के अनुसार तन मन धन से आपदाग्रस्त व्यक्तियों की सहायता करें।इस तरह आपसी सहयोग से पीड़ितों को राहत पहुंचाई जा सकती है।

(ग)वक्ता के जीवन के उद्देश्य के बारे में लिखिए।
उत्तर-वक्ता के जीवन का उद्देश्य दीन दुखियों की सहायता करना तथा आपदाग्रस्त व्यक्तियों की सहयोगी बनना है।इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसने उन बच्चों की माँ बनना उचित समझा और उन बच्चों को स्वीकार किया जिनकी माँ एक पेड़ के नीचे भूख के कारण मर गई थी।

(घ)चित्रकारी व समाजसेवा दोनों ही उपयोगी हैं।कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-जहां चित्रकारी कलाकार का एक सर्वश्रेष्ठ रूप है वहीं समाज सेवा जन कल्याण का उत्तम रूप है।इसलिए दोनों का ही उपयोग है।चित्र में एक चित्रकार अपने मन के भावों को इस प्रकार व्यक्त करता है कि देखने वाला भावविभोर हो उठता है। जैसे चित्रा ने अनाथ बच्चों का चित्र बनाया जो कि दर्शकों के मन में करुणा का भाव जगाने वाला था।वह इतनी वास्तविकता से भरा था कि उसे उस पर पुरस्कार तथा प्रसिद्धि दोनों की ही प्राप्ति हुई।दूसरी तरफ अरुणा द्वारा की गई समाज सेवा ने मानवता का एक उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत किया जिसके माध्यम से अनाथ बच्चों की जिंदगी बन गई।इस प्रकार दोनों ही कलाकारों के भाव जीवन उपयोगी हैं लेकिन अरुणा के द्वारा किया गया कार्य एक मानव धर्म था।

EXTRA QUESTION LESSON 10(DO KALAKAR)

(प्रश्न-1)कागज पर निर्जीव चित्रों से आप क्या समझते हैं? अरुणा ने चित्रों को निर्जीव क्यों कहा?क्या आप किस विचार से सहमत हैं?
उत्तर-किसी भी चित्रकार द्वारा चित्र बनाए जाते हैं तो वह चित्र भले ही कितने भी जीवंत क्यों ना दिखाई दे रहे हों लेकिन होते तो निर्जीव ही हैं।बस उसमें एक चित्रकार की प्रशंसा होती है कि उसने कितने जीवंत चित्र प्रस्तुत किए हैं।
हाँ, मैं इस विचार से पूर्णतया सहमत हूं क्योंकि चित्रकार द्वारा दिखाए गए चित्रों में भाव केवल चित्रकार या चित्रों तक ही सीमित होते हैं।उनकी सार्थकता तभी है जब उन चित्रों के माध्यम से किसी गरीब या असहाय व्यक्ति का कुछ भला हो सके।

(प्रश्न-2)देश के किसी भी भाग में आपदा की स्थिति उत्पन्न होने पर नागरिकों का क्या कर्त्तव्य होना चाहिए?
उत्तर-देश के किसी भी भाग में आपदा की स्थिति उत्पन्न होने पर नागरिकों का कर्त्तव्य होना चाहिए कि सभी अपनी अपनी क्षमता के अनुसार तन मन धन से आपदाग्रस्त व्यक्तियों की सहायता करें।इस प्रकार आपसी सहयोग से पीड़ितों को राहत पहुंचाई जा सकती है।

(प्रश्न-3)दोनों सखियों में कैसी मित्रता थी?सच्ची मित्रता का कोई ऐतिहासिक उदाहरण लिखिए।
उत्तर-दोनों सखियाँ एक दूसरे की अभिन्न मित्र थीं।दोनों अपने अपने ध्येय के प्रति समर्पित थीं।हॉस्टल में तो उन दोनों की मित्रता का उदाहरण दिया जाता था।सच्ची मित्रता हमारे जीवन के लिए भी उपयोगी होती है।यह जरूरी नहीं होता कि हमारी सोच एक जैसी हो तभी हमारी मित्रता होगी।दो अलग-अलग विचारों वाले व्यक्तियों की भी मित्रता बहुत गहरी देखी जाती है।पुराणों में भी राम तथा सुग्रीव की मित्रता,कृष्ण तथा सुदामा की मित्रता,कर्ण तथा दुर्योधन की मित्रता प्रसिद्ध है।

साहित्य सागर पद्य भाग

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए |

LESSON-1(SAKHI)

प्रश्न 1- "जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाही
प्रेम गली अति सांकरी, तामे दो न समाही"|

(क) उपर्युक्त साखी में कवि ने 'मैं' तथा 'हरि' शब्द का प्रयोग किनके लिए किया है?
उत्तर- 'मैं' का प्रयोग कवि ने अहं अथवा अहंकार के लिए किया है | अहंकार अर्थात हमारा घमंड और अभिमान |
"हरि" शब्द का प्रयोग ईश्वर अथवा परम ब्रह्म के लिए आया है
जिनकी तुलना अतुलनीय है |

(ख) ' जब मैं था तब हरि नहीं' इस पंक्ति में कबीर का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए |
उत्तर- कबीरदास जी कहते हैं कि जब तक मेरे मन में अहं की भावना अथवा अहंकार का भाव विद्यमान था तब तक मुझे ईश्वर के दर्शन नहीं हुए क्योंकि ईश्वर उन्हीं लोगों से प्रेम करते हैं जिनका हृदय निर्मल एवं सरल होता है | अभिमानी तथा अहंकारी मनुष्य अपने घमंड में इतना फूला फूला रहता है कि वह ईश्वर के किसी भी रूप को पहचान नहीं पाता | तात्पर्य यह है कि जहां अहंकार है वहां ईश्वर का वास हो ही नहीं सकता |

(ग) 'अब हरि हैं' से कवि का क्या तात्पर्य है ? कवि के अनुभव को अपने शब्दों में लिखिए |
उत्तर- 'अब हरि हैं ' से कबीर दास जी का तात्पर्य यह है कि अब उनके मन में ईश्वर का वास है जब उनके मन से अहंकार की भावना चली गई | जब उनका मन निर्मल, सरल एवं पवित्र हो गया तब उन्हें ईश्वर की उपस्थिति का आभास अपने मन में होने लगा और उनके मन से अहं भाव के लुप्त हो जाने पर उनके मन में ईश्वर का वास हो गया |

(घ) 'प्रेम गली अति सांकरी' कहकर कवि ने क्या स्पष्ट करना चाहा है ?
उत्तर- इस पंक्ति के माध्यम से कवि स्पष्ट करना चाहते हैं कि प्रेम का मार्ग अत्यंत संकरा और तंग है | वहां पर अहंकार अथवा अभिमान जैसी दुर्भावना के लिए कोई जगह ही नहीं है |प्रेम की इस गली में ईश्वर तथा अहं एक साथ नहीं समा सकते हैं | ईश्वर की प्राप्ति तभी होगी जब मानव अहंकार की भावना को त्याग देगा | अहंकार एवं ईश्वर कभी भी एक साथ नहीं रह सकते हैं |

EXTRA QUESTIONS. LESSON 1(SAKHI)

(1) कबीर दास जी ने गुरु और गोविंद में से किसे ज्यादा महत्व दिया है ?
उत्तर-कवि कहते हैं कि गुरु और भगवान दोनों जब उनके सामने खड़े होते हैं तो वे पहले दुविधा में पड़ जाते हैं लेकिन कुछ समय पश्चात वे समझ पाते हैं और निर्णय लेते हैं कि उन्हें गुरु के ही चरण स्पर्श करने चाहिए। कबीर दास जी के अनुसार गुरु हमारे अज्ञान को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश देते हैं जिससे हम भगवान तक पहुंच सकते हैं।अतः अंत में वे गुरु को ही ज्यादा महत्व देते हैं।

(2)कवि को मुसलमानों की कौन सी पूजा पद्धति पसंद नहीं है और क्यों?
उत्तर-कबीर दास जी के अनुसार मुसलमानों के मौलवी मस्जिद पर चढ़कर दिन में पांच बार अज़ान की आवाज लगाते हैं। कबीर के अनुसार अज़ान का अर्थ खुदा को चिल्ला चिल्ला कर याद करना नहीं है।उन्हें खुदा को याद करने का उनका यह तरीका पसंद नहीं है। उनका कहना है कि अज़ान मस्जिद पर चढ़कर चिल्लाकर ही क्यों दी जाती है?क्या खुदा बहरे हैं जो हमारे मन की शांत पुकार को ना सुन सकें।खुदा तो हमारे मन में बसते हैं।इसलिए चिल्ला चिल्ला कर पुकारने की कोई आवश्यकता नहीं है।अगर हम उन्हें मन में भी पुकारे तो वह सुन सकते हैं।

(3)कवि हिंदुओं की मूर्ति पूजा पर अपने क्या विचार रखते हैं?
उत्तर-कवि हिंदुओं की मूर्ति पूजा को भी एक बाहरी आडंबर बताते हुए यह कहते हैं कि मूर्तियों को पूजने से कोई लाभ नहीं मिलता।कवि को मूर्ति पूजा से चक्की की पूजा करना अधिक उपयोगी लगता है क्योंकि घर में बड़ी चक्की का उपयोग अनाज पीसने के लिए किया जाता है।पिसे हुए अनाज से रोटी बनती है और संसार के लोगों का पेट भरता है।अतः मंदिर में स्थिर बैठी मूर्ति से अच्छी भली तो घर में पड़ी वह चक्की है जो सब लोगों का पेट भरती है।मूर्ति की पूजा व्यर्थ है।

LESSON-2(GIRIDHAR KI KUNDALIYAN)

प्रश्न 2- " साईं सब संसार में, मतलब का व्यवहार |
जब लग पैसा गांठ में , तब लग ताको यार ||
तब लग ताको यार , यार संग ही संग डोले |
पैसा रहे न पास , यार मुख से नहीं बोले ||
कह 'गिरधर कविराय' जगत यही लेखा भाई |
करत बेगरजी प्रीति, यार बिरला कोई साईं ||"

(क) कवि का नाम बताते हुए लिखिए कि 'मतलब का व्यवहार' से कवि का क्या तात्पर्य है?
उत्तर- प्रस्तुत कुंडलियों के कवि का नाम श्री गिरिधर कविराय है | कवि ने कहा है कि जहां पर लोग केवल अपने मतलब के लिए मित्रता करते हैं तथा अपना स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर अर्थात मतलब निकल जाने पर रिश्ता तोड़ लेते हैं | ऐसे व्यवहार को मतलब का व्यवहार कहते हैं |
कवि ने ऐसा इसलिए कहा है कि संसार में ज्यादातर ऐसा ही होता है | कवि ने अपने जीवन के अनुभव को इन पंक्तियों में व्यक्त किया है |

(ख) कवि के अनुसार लोग किसे मित्र बनाना चाहते हैं और क्यों?
उत्तर- कवि के अनुसार इस संसार में अधिकतर लोग धनवान व्यक्तियों को मित्र बनाना चाहते हैं | निर्धन लोगों के समीप तक भी कोई जाना नहीं चाहता | धनी लोगों से मित्रता करने पर उन्हें हर तरह से लाभ होता है तथा उनके सभी स्वार्थ सिद्ध होते हैं | अतः वे धनी व्यक्तियों से ही मित्रता करना चाहते हैं | वह सोचते हैं कि निर्धनों से मित्रता करके उन्हें कोई लाभ नहीं होगा |

(ग) ' जगत यही लेखा भाई' इस पंक्ति से कवि का क्या आशय है? समझा कर लिखिए |
उत्तर- इस पंक्ति के द्वारा कवि कहना चाहते हैं कि इस संसार की यही रीति है, यही चलन है अर्थात इस संसार में यही चला आ रहा है कि लोग रुपए पैसे वालों से रिश्ता जोड़ते हैं, उनसे मित्रता करते हैं और गरीबों से कतराते हैं | धनी लोगों के बहुत मित्र बन जाते हैं पर निर्धन लोगों का कोई भी नहीं होता | कवि कहते हैं कि इस संसार में सभी लोग केवल अपने स्वार्थ , अपने मतलब के लिए मित्रता का ढोंग या दिखावा करते हैं | निःस्वार्थ मित्रता करने वाले लोग इस संसार में बहुत कम (विरले) ही होते हैं |

(घ) इन पंक्तियों में निहित संदेश को अपने शब्दों में लिखिए |
उत्तर - इन पंक्तियों में छिपा हुआ संदेश बहुत ही उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है | यह बात सही है कि इस संसार में सभी रिश्ते मतलब एवं स्वार्थ पर आधारित होते हैं | लोग अपने मतलब के लिए मित्रता का दिखावा करते हैं, काम निकालने के लिए दोस्ती का हाथ बढ़ाते हैं और स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर मुंह मोड़ लेते हैं |
हमें ऐसे स्वार्थ पूर्ण रिश्तो की पहचान करते हुए किसी के बहकावे में नहीं आना चाहिए और ना ही किसी का फायदा उठाना चाहिए | साथ ही हमें यह भी समझना चाहिए कि मित्रता में कोई भी अमीर अथवा गरीब नहीं होता | मित्रता एक बहुत पवित्र तथा महान रिश्ता होता है | कृष्ण सुदामा की मैत्री का प्रसंग पढ़कर हमें सच्ची मित्रता की महानता का ज्ञान होता है |

EXTRA QUESTIONS. LESSON 2(GIRIDHAR KI KUNDALIYAN)

(प्रश्न-1)कवि सब हथियार छोड़कर लाठी लेने की बात क्यों कर रहे हैं?अपने विचार व्यक्त कीजिए।
उत्तर-कवि सब हथियार छोड़कर लाठी लेने की बात इसलिए कर रहे हैं क्योंकि लाठी एक ऐसा उपकरण है जो कि ना केवल एक हथियार है बल्कि अन्य अनेक व्यवधानों को दूर करने में भी सहायक होता है।जबकि अन्य हथियार जैसे चाकू,तलवार आदि केवल आत्मरक्षा के लिए ही काम आ सकते हैं।इस प्रकार यात्रा के समय अपने साथ रखने के लिए लाठी एक बहुत उपयोगी वस्तु है।

(प्रश्न-2)कमरी के कौन-कौन से उपयोग कवि ने बताए हैं?
उत्तर-कमरी अर्थात कंबल दिखने में साधारण और सस्ता होता है परंतु यह बहुत उपयोगी होता है।यात्रा के दौरान तथा घर में भी बहुत काम आता है।व्यक्ति की इज़्ज़त बनाए रखता है। कीमती वस्तुओं को सुरक्षित रखता है।इसकी बड़ी गठरी बनाकर उसमें सामान बांध कर ले जाया जा सकता है।रात को कहीं बिछाकर सो भी सकते हैं।इस प्रकार देखने में यह साधारण सा कंबल बहुत ही उपयोगी होता है।

(प्रश्न-3)कौवे तथा कोयल का उदाहरण देकर कवि क्या समझाना चाहते हैं?
उत्तर-कौवे तथा कोयल के उदाहरण द्वारा कवि यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि संसार में व्यक्ति रूप रंग से नहीं,बल्कि गुणों के कारण प्रिय होते हैं और सम्मान पाते हैं।कोयल तथा कौवा दोनों देखने में बिल्कुल एक जैसे ही लगते हैं लेकिन कोयल अपनी मधुर वाणी के कारण सबको अच्छी लगती है।इसके विपरीत कौवे की कर्कश वाणी को सुनकर सब उसे अपशगुन समझते हैं तथा उसे उड़ा देते हैं।

LESSON 3(SWARG BANA SAKTE HAIN)

(प्रश्न 3) " उसे भूल व फंसा परस्पर ही शंका में भय में ,
लगा हुआ केवल अपने में और भोग संचय में " ||

(क) उसे भूल से क्या तात्पर्य है ? कौन किसे भूल गया है और क्यों ?
उत्तर - 'उसे भूल' से कवि का तात्पर्य है कि आज मानव इस बात को भूल गया है कि सच्चा सुख आपसी प्रेम, सद्भावना एवं संतोषप्रद जीवन बिताने में है | वह स्नेह- प्रेम , विश्वबंधुत्व की सद्भावना को भूलता जा रहा है |
आज का मानव इन सब बातों को स्वार्थवश भूल गया है | वह अब केवल अपना सुख देखना चाहता है | लालच में अंधा होकर वह केवल अकेले ही सभी सुखों का उपभोग करने की कामना कर रहा है |

(ख) कवि के अनुसार आज मनुष्य किस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहा है?
उत्तर - कवि के अनुसार आज का मानव बहुत ही स्वर्थपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा है | वह आपस में अनेक मतभेद पैदा करते हुए वैमनस्य तथा शत्रुता को बढ़ावा दे रहा है | अपनी उन्नति तथा सुखों को लेकर उसका मन सदैव आशंकाओं से घिरा रहता है |

अधिक से अधिक सुखों को पाने की चाह में यथार्थ में वह मन ही मन दुखी एवं तनावग्रस्त रहता है | दुनिया भर के सुख साधनो तथा ऐश्वर्य की खोज में लगा हुआ वह उन्हें भविष्य के लिए भी संचित कर लेना चाहता है | इस मृग- मरीचिका के पीछे भटकते हुए संघर्ष करता है, अशांत रहता है तथा उसका जीवन कभी भी सुखी नहीं रह पाता |

(ग) बताइए कि आपके विचार में जीवन में सच्चा सुख किस प्रकार मिल सकता है ?
उत्तर- जीवन में सच्चा सुख पाने के लिए हमें अपने विचारों में उदारता लानी होगी | इसके लिए हमें केवल अपने विषय में ना सोच कर दूसरों के बारे में भी विचार करना होगा | जीवन में सच्चा सुख तभी आ सकता है जब हम में आत्म संतोष होगा, जब हम स्वार्थ तथा लालच की दुर्भावना का त्याग करते हुए सबको साथ लेकर चलेंगे | यह बात सच है कि स्वयं त्याग करते हुए जब हम दूसरों के भले के लिए अच्छे काम करते हैं तब हमें आत्मसंतुष्टि मिलती है | संसार में ऐसे महामानव की भी कमी नहीं है जो कि दूसरे की भलाई के लिए अपना जीवन उत्सर्ग कर देते हैं | देखा जाए तो सच्चा सुख आत्म संतोष, परोपकार, त्याग तथा परस्पर प्रेम भावना के साथ जीवन बिताने में ही है |

(घ) कविता का नाम बताते हुए कवि का जीवन परिचय संक्षेप में लिखिए ।
उत्तर - कविता का नाम है - 'स्वर्ग बना सकते हैं' | इसके कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर जी का जन्म सन 1908 में बिहार प्रांत के मुंगेर जिले में हुआ था | अपने शैक्षिक काल में ही अनेक प्रतिभाओं का परिचय देते हुए उन्होंने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की | कालांतर में इन्होंने सब रजिस्ट्रार तथा महाविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष के पद पर कार्य किया | वे भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे | उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण की उपाधि से सम्मानित किया गया | यह राज्यसभा के सदस्य भी रहे | प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ उर्वशी पर उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार भी प्राप्त हुआ | इनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता एवं भारतीय संस्कृति की झलक देखने को मिलती है | सन 1974 में उनका निधन हो गया |

EXTRA QUESTIONS-LESSON 3(SWARG BANA SAKTE HAIN)

(प्रश्न-1)'स्वर्ग बना सकते हैं 'कविता का केंद्रीय भाव लिखिए।
उत्तर-स्वर्ग बना सकते हैं कविता का यह अंश कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर जी की सुप्रसिद्ध रचना 'कुरुक्षेत्र' से अवतरित है।इसके अंतर्गत भीष्म पितामह द्वारा धर्मराज युधिष्ठिर को दिया गया उनका अंतिम उपदेश निहित है।शर शैया पर लेटे हुए पितामह ने अनेक प्रकार के हितोपदेश देते हुए युधिष्ठिर से कहा कि'हे धर्मराज,यह धरती किसी की खरीदी हुई दासी नहीं है।सभी प्राणियों का इस पर समान अधिकार है। प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं की सभी लोगों को समान आवश्यकता है। अतः बिना किसी भेदभाव के स्वार्थ भावना से सभी को मिलजुलकर वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए।जब तक सभी मनुष्यों को न्यायोचित सुख नहीं मिलेगा,तब तक अनंत काल से चला आ रहा संघर्ष भी कम नहीं होगा।एक साथ मिलकर समान रूप से सुखों का उपभोग करते हुए इस धरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है।

(प्रश्न-2)कोलाहल तथा संघर्ष शब्दों का प्रयोग कवि ने किस संदर्भ में किया है?बताइए।
उत्तर-कोलाहल का अर्थ है'शोरगुल' तथा संघर्ष का अर्थ है 'लड़ाई'।यहाँ पर कोलाहल शब्द से तात्पर्य अशांति,लड़ाई झगड़ा तथा तनावपूर्ण वातावरण से उत्पन्न हंगामे से है।हम सब आपस में संघर्ष करते हुए एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में व्यस्त रहते हैं।अपनी उन्नति पाने के लिए दूसरों को पीछे धकेल देना चाहते हैं।मानव मात्र में आपसी मतभेद कलह तथा शत्रुता से उत्पन्न अशांति को कवि ने कोलाहल कहा है तथा आपस में बढ़ रही शत्रुता के फलस्वरूप बढ़ रहे लड़ाई झगड़े को कवि ने संघर्ष का नाम दिया है।

(प्रश्न-3)'सब हो सकते तुष्ट' से क्या तात्पर्य है?स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-'सब हो सकते तुष्ट' से तात्पर्य है कि सभी लोग संतुष्ट हो सकते हैं।अर्थात कवि कहना चाहते हैं कि यदि संसार में सभी मानव परस्पर मिल बांटकर समान रूप से ईश्वर प्रदत्त वैभव के साधनों का उपयोग करें तो सभी मनुष्य उपभोग भी कर सकते हैं और संतुष्ट होकर सुखी जीवन भी बिता सकते हैं।

LESSON-4(WAHA JANMABHUMI MERI)

(प्रश्न-1)"गंगा,यमुना,त्रिवेणी,नदियां लहर रही हैं, जगमग छटा निराली पग पग पर छहर रही है।वह पुण्य भूमि मेरी,वह स्वर्ण भूमि मेरी"।

क)उपर्युक्त पंक्तियों में किस के विषय में बात की जा रही है?
कवि के शब्दों में वर्णन कीजिए ।
उत्तर-उपर्युक्त पंक्तियों में कवि अपने देश भारतवर्ष के विषय में बात कर रहे हैं।कवि कह रहे हैं कि मेरे देश में गंगा-यमुना जैसी अनेक पवित्र नदियां बहती हैं।गंगा, यमुना ,सरस्वती का संगम त्रिवेणी (प्रयागराज) भी यहीं पर स्थित है।इन नदियों की अथाह जल राशि कदम कदम पर सबका ध्यान आकर्षित करती है।

(ख)पुण्य भूमि तथा स्वर्ण भूमि शब्दों का आशय समझाते हुए बताइए कि यहां पर कवि ने इन शब्दों का प्रयोग किस संदर्भ में किया है?
उत्तर- 'पुण्यभूमि'अर्थात पवित्र धरती।'स्वर्णभूमि' अर्थात सोने की धरती। धन संपदा से सम्पन्न-भूमि।यहाँ पर कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी ने अपनी जन्मभूमि भारत को पुण्यभूमि कहकर संबोधित किया है क्योंकि अपनी महानता के कारण यह धरती किसी तीर्थ से कम नहीं है।स्वर्णभूमि कहकर कवि यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि असीम प्राकृतिक सौंदर्य तथा अकूत धन संपदा से भरपूर हमारा देश सोने की धरती कहलाने के योग्य है।

(ग)कविता का शीर्षक बताते हुए लिखिए कि इस कविता के द्वारा कवि ने हमें क्या संदेश दिया है?
उत्तर-प्रस्तुत कविता वह जन्मभूमि मेरी प्रख्यात कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी जी की देश प्रेम पर आधारित भावपूर्ण कविता है।इसके द्वारा कवि हमें संदेश देना चाहते हैं कि हमें अपनी जन्मभूमि का सम्मान करना चाहिए।जिस देश की धरती पर हमने जन्म लिया है वह माँ के समान आदरणीय एवं सम्मान के योग्य है क्योंकि हम उसकी गोद में जन्म लेकर पले बढ़े हैं और वह प्राकृतिक वातावरण,फल-फूल आदि देकर हमारा पालन-पोषण करती है। हम अपना संपूर्ण जीवन उसी भूमि पर बिताते हैं और अंत में भी वही हमें अपने आप में समाहित कर लेती है।अतः हर एक भारतीय को अपने देश से प्रेम करते हुए उसके सम्मान एवं मान मर्यादा की रक्षा करनी चाहिए।

(घ)बताइए कि वर्तमान समय में यह कविता कहां तक सार्थक एवं उपयोगी है?
उत्तर-साहित्य की कोई भी विधा चाहे कविता हो या कहानी, उपन्यास,नाटक हर युग एवं हर समय के लिए उपयोगी तथा सार्थक होती है। इस कविता का महत्त्व आज के आपा-धापी के समय में और भी बढ़ जाता है क्योंकि आज समय तेज़ी से बदल रहा है।इस बदलते परिवेश में बच्चों तथा युवाओं के मन में देशभक्ति,देश प्रेम जैसी भावनाओं के लिए कोई विशेष स्थान नहीं है क्योंकि इन सब विषयों में उनकी कोई रुचि दिखाई नहीं देती है और ना ही उन्हें इस विषय में के बारे में गंभीरता से बताया जाता है।प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति भी बच्चों तथा युवा पीढ़ी का आकर्षण कम होता जा रहा है।आधुनिक सुख-सुविधाओं में व्यस्त इन सबके लिए समय ही नहीं है।ऐसी स्थिति को ध्यान में रखते हुए युवाओं को इस प्रकार की कविताएं समझाएं तो निश्चित रूप से उनके मस्तिष्क में देशप्रेम उत्पन्न होगा।

EXTRA QUESTIONS-LESSON 4(WAHA JANMABHUMI MERI)

(प्रश्न-1)मलय पवन से क्या तात्पर्य है?वह हमें किस प्रकार प्रभावित करती है?स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-मलय पवन से तात्पर्य है चंदन की भीनी भीनी सुगंध से युक्त शीतल मंद एवं सुगंधित वायु।हमारे देश में दक्षिण की ओर मलय पर्वत स्थित है।वहाँ पर चंदन के वृक्षों की अधिकता है।उन पर्वतों से चलने वाली हवा इसीलिए सुगंधित एवं शीतल होती है।जब मलय पवन उत्तर की ओर वातावरण में बहती है तो हमारे शरीर एवं मन को आनंद तथा स्फूर्ति से भर देती है। हमारा तन मन स्वस्थ एवं प्रसन्न हो जाता है।

(प्रश्न-2)कवि किसे 'धर्मभूमि' तथा 'कर्मभूमि' कहकर संबोधित कर रहे हैं और क्यों?
उत्तर-'धर्मभूमि' तथा 'कर्मभूमि' कहकर कवि ने अपनी जन्मभूमि भारतवर्ष को संबोधित किया है।हमारे देश में अनेक धर्मों को आश्रय मिला है।हमारा धर्म एवं हमारी संस्कृति सनातन है।भारत भूमि हर व्यक्ति को अपने धर्म का पालन करने तथा धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। इसलिए यह हमारी जन्मभूमि है।इस भूमि की सेवा करना हमारा धर्म है।'कर्मभूमि' इसलिए कहा गया है कि हमारे देश की संस्कृति कर्म प्रधान है।वेदों,पुराणों तथा सभी ग्रंथों में कर्म को अधिक महत्त्व दिया गया है।हमारी भूमि इस कर्म प्रधान संसार में निरंतर कर्म करने के लिए प्रेरित करती है और हमारे जन्म के पश्चात इसी जन्म भूमि पर हमें कर्म करने का मौका भी देती है।

(प्रश्न-3)'बुद्धभूमि' से कवि का क्या आशय है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'बुद्धभूमि' से कवि का आशय हमारे देश की धरती पर ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले गौतम बुद्ध से है।गौतम बुद्ध को लंबे समय तक बोधि-वृक्ष (गया) के नीचे तपस्या करने के उपरांत ज्ञान प्राप्त हुआ था और वे महात्मा बुद्ध कहलाए।उनके अनुयायी हमारे देश में ही नहीं बल्कि विश्व के अन्य देशों में भी पाए जाते हैं।उन्होंने हिंसा न करने तथा सभी जीवों पर दया करने का उपदेश दिया था।

LESSON-5(MEGH AAYE)

(प्रश्न-1)मेघ आए बड़े बन ठन के संवर के,
आगे आगे नाचती गाती बयार चली,
दरवाजे खिड़कियां खुलने लगी गली गली,
पाहुन ज्यों आए हो गांव में शहर के,
मेघ आए बड़े बन ठन के संवर के।।

(क) मेघ किसके प्रतीक हैं?वह किस रूप में गांव में आए हैं? उनका स्वागत किस प्रकार होता है?
उत्तर- यहाँ मेघ ग्रामीण संस्कृति में दामाद के आने पर होने वाली प्रसन्नता को दर्शाते हैं। इस कविता में सांगरूपक अलंकार का प्रयोग किया गया है।इस कविता के माध्यम से कवि ने भीषण गर्मी के पश्चात आसमान में छाए बादलों को देखकर होने वाले उल्लास का वर्णन किया है। मेघ गांव के किसी घर में आने वाले दामाद के प्रतीक हैं।कृषि प्रधान गांव में जब लोगों को बादल दिखाई देते हैं तो उनके दिलों में उसी प्रकार का उल्लास भर जाता है जैसे किसी गांव में शहर से दामाद आता है तो पूरे गांव में प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है। जिस प्रकार विशेष मेहमान का स्वागत परात में पानी लेकर,पैर धोकर,गले लगाकर,मिलन के आंसू बहा कर करते हैं,उसी प्रकार से आसमान में बादलों को देखकर गांव में खुशी तथा उल्लास का माहौल बन जाता है।

(प्रश्न-2)यहाँ किस बयार की बात की जा रही है?उसे नाचते गाते हुए,चलते हुए क्यों दिखाया गया है?
उत्तर-यहाँ वर्षा से पूर्व आने वाली ठंडी ठंडी बयार अर्थात हवा की बात की जा रही है।उसे नाचते गाते हुए,चलते हुए इसलिए दिखाया गया है क्योंकि जिस प्रकार दामाद या मेहमान के आगे नाच गाने का कार्यक्रम किया जाता है,उसी प्रकार पुरवाई अर्थात पूर्व से आने वाली शीतल हवा मेघरूपी दामाद के आने की खुशखबरी देकर गांव में उत्सव का माहौल बना देती है। लोगों के दिलों में उल्लास छा जाता है और वे नाच गाकर इस खुशी को प्रकट करते हैं।

(प्रश्न-3)गली गली के दरवाजे खिड़कियाँ खुलने का क्या कारण है?अपने शब्दों में कवि के भाव स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-गली गली के दरवाजे खिड़कियाँ खुलने का मुख्य कारण यह है कि वर्षा काल से पूर्व अत्यधिक गर्मी का वातावरण होता है और लू से बचने के लिए लोग अपने खिड़की दरवाजे बंद करके रखते हैं।ऐसे में वर्षा के पूर्व चलने वाली ठंडी हवा का झोंका लोगों के दिलों को आनंद से भर देता है।लोग अपने घरों की गर्मी को दूर करने के लिए खिड़कियाँ दरवाजे खोल देते हैं ताकि गर्मी से राहत मिल सके और आने वाले बादलों का स्वागत भी कर सकें।

(प्रश्न-4) पाहुन ज्यों आए हो गांव में शहर के-पंक्ति के भाव सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-पाहुन ज्यों आए हो गांव में शहर के-पंक्ति में निहित भाव है गांव के लोगों के हृदय में बसा अतिथि देवो भव का भाव। गांव के लोग इतने आत्मीय भाव से आगंतुक का स्वागत करते हैं कि वहां आने वाले व्यक्ति का मन प्रसन्नता से भर जाता है। गांव में यदि कोई मेहमान या बहुत दिनों बाद आने वाला कोई अतिथि आता है तो सब प्रसन्न होकर उसका स्वागत करते हैं।

EXTRA QUESTIONS-LESSON-5(MEGH AAYE)

1.धूल किसकी प्रतीक है?वह क्या उठा कर भागी और क्यों? समझा कर लिखिए।
उत्तर-जब बादलों के आने से पूर्व वातावरण में अत्यधिक सूखा होने के कारण मिट्टी धूल का रूप धारण कर लेती है तो हवा के साथ मिली हुई उस धूल के गुब्बार को देखकर ऐसा लगता है जैसे कोई गांव की युवती किसी अनजाने व्यक्ति को देखकर अपना घाघरा (लहंगा) उठा कर अपने घर की ओर भागी चली जाती हो क्योंकि अनजान तथा अपरिचित लोगों से गांव की स्त्रियाँ सहज ही बात नहीं करती हैं।

2.इस कविता का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-प्रस्तुत कविता में कवि ने दिखाया है कि गांव में दामाद का जो स्थान है वही स्थान वर्षा कालीन बादलों का भी है। उनका भी उसी तरह स्वागत किया जाता है जैसे गांव के दामाद का क्योंकि गांव की कृषि पूरी तरह वर्षा ऋतु के बादलों पर ही निर्भर करती है।

3.क्षमा करो गांठ खुल गई भरम की- पंक्ति में किसने किससे क्षमा मांगी और क्यों?समझा कर लिखिए।
उत्तर-क्षमा करो गांठ खुल गई भरम की-पंक्ति में लता रूपी पत्नी ने बादल रूपी पति से क्षमा मांगी है।यह एक प्रतीकात्मक कविता है जिसमें बादल मेहमान का तथा लता उसकी पत्नी का प्रतीक है।लंबे,गर्म और सूखे मौसम से परेशान लता रूपी पत्नी यह सोचने लगी थी कि उसके पति ने उसे भुला दिया है लेकिन जब बिजली कड़कडा़कर तथा ठंडी हवा चलाकर बादल रूपी पति ने विश्वास दिलाया कि यह उसका भ्रम था। अब वह आ गया है। तब लता का भ्रम टूट गया और वह अपनी गलतफहमी के लिए क्षमा मांगने लगी।

LESSON-6(SOOR KE PAD)

(प्रश्न-1) मैया मेरी ,चंद्र खिलौना लैहौं।।
धौरी को पय पान न करिहौं, बेनी सिर न गुथैहौं।
मोतिन माल न धरिहौं उर पर, झुंगली कंठ न लैहौं।।

(क)कौन किससे क्या लेने की जिद कर रहा है?
उत्तर-प्रस्तुत पद में श्री कृष्ण की बाल सुलभ क्रियाओं का बहुत ही सुंदर तथा सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है।बच्चों की आदत होती है कि वह किसी भी चीज को पाने की जिद करने लगते हैं।वह इस बात से बिल्कुल अनभिज्ञ होते हैं कि वे जिस चीज को पाने की जिद कर रहे हैं वह उपलब्ध हो भी सकती है या नहीं।यहाँ बालक कृष्ण भी आसमान में चांद देखकर अपनी माता से उसे पाने की जिद कर रहे हैं।

(ख)श्री कृष्ण अपनी जीत किस प्रकार व्यक्त कर रहे हैं?समझा कर लिखिए।
उत्तर-श्रीकृष्ण अपनी माता से चांद रूपी खिलौना लेने की जिद कर रहे हैं।वह अपनी जीत प्रकट करते हुए कहते हैं कि यदि उन्होंने उन्हें आसमान में सफ़ेद सफ़ेद चमकने वाला चांद रूपी खिलौना नहीं दिया तो वह सफ़ेद गाय का दूध नहीं पिएंगे।सिर के बालों की जो शिखा है उसे नहीं गुंथवाएंगे।गले में मोतियों की माला नहीं पहनेंगे तथा अपने गले में झिंगोला भी नहीं डालने देंगे।

(ग)बच्चे की जिद पूरी करने में असमर्थ माँ उसे बहलाने के लिए क्या कहती है?बच्चा क्या उत्तर देता है?
उत्तर-यशोदा माता जब अपने कान्हा को अनोखी जिद करते हुए देखती हैं तो वे उन्हें मनाने के लिए उनके कान में धीरे से कहती है कि वे उनके लिए चांद जैसी दुल्हन लेकर आएंगी।जब श्रीकृष्ण अपनी माँ के मुख से अपनी चांद जैसे दुल्हन की बात सुनते हैं तो वे अपनी माँ की कसम खाकर कहते हैं कि वे तुरंत विवाह करने के लिए तैयार हैं।

(घ)अर्थ लिखिए।
धौरी-सफ़ेद गाय,पय-दूध,बेनी-चोटी,उर-हृदय,धरनी-धरती,सुत-पुत्र

EXTRA QUESTIONS-LESSON-6(SOOR KE PAD)

1.श्री कृष्ण को मनाने के लिए माँ यशोदा ने क्या किया और क्यों?
उत्तर-श्री कृष्ण की ज़िद को देखते हुए माँ यशोदा बड़ी ही चतुराई से उसके कान में कुछ कहती हैं जिससे बलराम ना सुन पाए।वह ऐसा इसलिए करती हैं कि कान्हा को लगे कि वह बलराम की अपेक्षा उनसे ज्यादा प्यार करती हैं।

2.किसके नयन जल से भर जाते हैं और क्यों?स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-भगवान श्री कृष्ण के नयन जल से भर जाते हैं।बालक कृष्ण जब खेलते हुए,चलते हुए झुक कर अपने बालों को खींच लेते हैं तो उन्हें पीड़ा होती है।इसके कारण उनकी आंखों में आंसू आ जाते हैं।

3.करी करी सेन बतावे से कवि का क्या तात्पर्य है?समझा कर लिखिए।
उत्तर-माँ को ऐसा लगता है जैसे कृष्ण सो गए हैं।अतः लोरी गाना बंद कर देती है तथा संकेत यानी इशारों से बातें करती है जिससे कान्हा की कच्ची नींद ना टूटे।

LESSON-7(विनय के पद)

प्रश्न 1-" ऐसो को उदार जग माहीं।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं ।।
जो गति जोग विराग जतन करि नहीं पावत मुनि ज्ञानी ।
सो गति देत गीध सबरी कहूं प्रभु ना बहुत जिय जानी ।।
जो संपत्ति दस सीस अरप करि रावण शिव पहं लीन्हीं।
सो संपदा विभीषण कहं अति सकुच सहित प्रभु दीन्हीं।।
तुलसीदास सब भांति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो ।
तो भजो राम काम सब पूरन कर कृपानिधि तेरो।। "

(क)प्रस्तुत पद के कवि कौन हैं? वह किसके उपासक थे तथा किस प्रकार की भक्ति को महत्व देते थे?
उत्तर-प्रस्तुत पद के कवि श्री तुलसीदास जी हैं।तुलसीदास जी अयोध्यावासी दशरथ पुत्र श्री राम के उपासक थे ।वे अपने राम को स्वामी और स्वयं को उनका दास मानते थे इसलिए उनकी भक्ति दास्य भाव की भक्ति कही जाती है। कवि का यह मानना है कि यदि मनुष्य संसार के जन्म-मृत्यु के बंधन से पार उतरना चाहता है तो उसे राम की भक्ति का सहारा लेना ही होगा।

(ख)'ऐसो को उदार जग माहीं' से कवि का क्या तात्पर्य है?कवि ने किसे उदार कहा है और क्यों?
उत्तर-कवि कहना चाहते हैं कि भगवान श्री राम जैसा उदार और दयावान व्यक्ति इस संसार में दूसरा और कोई नहीं है।प्रभु श्री राम अत्यंत दयालु एवं कृपालु हैं और बिना किसी प्रकार की सेवा के भी वह दीन दुखियों पर अपनी कृपा करते हैं।

(ग)गीध और शबरी को किसने, कौन सा स्थान दिया और क्यों?
उत्तर-गिद्ध अर्थात जटायु के आत्म त्याग और सबरी अर्थात शबर जात की स्त्री की भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान राम ने उन्हें परम पद दिया। जटायु ने सीता की रक्षा करने में अपने प्राणों की परवाह नहीं की थी इसलिए श्रीराम ने उन्हें अपने पिता का स्थान दिया एवं उनका दाह संस्कार किया तथा शबरी ने बड़े भोलेपन से प्रेम पूर्वक राम को अपने द्वारा चखे हुए मीठे बेर खिलाए थे जिन्हें बिना किसी संकोच के श्रीराम ने खा लिए थे।

(घ)' दस सीस ' का यहां क्या संदर्भ है? समझा कर लिखिए।
उत्तर-' दस सीस ' का शाब्दिक अर्थ है है दस सिर। यहां पर इसका प्रयोग लंकापति रावण के लिए किया गया है। कहा जाता है कि रावण के दस सिर एवं बीस भुजाएं थीं। रावण भगवान शिव का परम भक्त था। अपने आराध्य देव को प्रसन्न करने के लिए उसने अपने दसों सिरों को एक-एक करके शिव जी के चरणों में अर्पित कर दिए थे। रावण के सिर अर्पित करने के उपरांत शिव जी की कृपा से उसके सिर स्वाभाविक रूप से फिर से जुड़ जाते थे। भक्त सदैव अपनी प्रिय वस्तु भगवान को अर्पित करना चाहता है इसलिए रावण ने भी शिवजी को प्रसन्न करने के लिए इतना बड़ा त्याग किया था।

EXTRA QUESTIONS(VINAYA KE PAD)

(1)भगवान शिव से रावण को संपत्ति के रूप में क्या-क्या प्राप्त हुआ?
उत्तर-रावण की तपस्या एवं उसके महान त्याग से भोलेनाथ शिव अत्यंत प्रसन्न हो गए। उन्होंने रावण को यश, वैभव एवं अतुल संपदा का स्वामी बना दिया । रावण की इच्छा के अनुसार उन्होंने उसे यह भी वरदान दिया कि वह तीनों लोकों(स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक तथा पाताल लोक) में अजेय हो जाए । उसे कोई भी जाति परास्त ना कर सके। मनुष्य का तो उसे कोई भी भय न था।

शिवजी से इच्छित वरदान पाकर वह अभिमानी हो गया और सोने की लंका जो कि समुद्र की चारदीवारी से गिरी थी, का महाराजा बनकर तीनों लोकों पर राज करने लगा। इस प्रकार शिवजी को प्रसन्न कर रावण अपार संपदा का स्वामी बन गया था।

(2)भगवान राम ने विभीषण के प्रति किस प्रकार उदारता दिखाई?

उत्तर-विभीषण रावण का छोटा भाई था वह श्रीराम का भक्त था अतः उसने राम और रावण के संघर्ष में श्री राम का पक्ष लिया रावण की पराजय के पश्चात श्री राम ने उसकी सारी की सारी अपार संपत्ति अत्यंत विनम्र भाव से विभीषण को सौंप दी। इससे श्री राम की शालीनता वह भक्त- वत्सलता प्रकट होती है जिसके लिए तुलसीदास ने उनकी प्रशंसा की है।

प्रश्न 2- "जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजिए ताहि कोटि वैरी सम जद्पि परम स्नेही।।
तज्यो पिता प्रहलाद विभीषण बन्धु भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रज बनितन्हि, भए मुद मंगलकारी।।
नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्यव्य जहां लो।
अंजन कहा आप जेहि फूटे बहु तक कहौं कहाँ लो ।।
तुलसी सो सब भांति परमहित पूज्य प्राण ते प्यारो ।
जासों होय सनेह राम-पद , एतो मतो हमारो।।

(क)'राम'और 'वैदेही' शब्द किन के लिए प्रयुक्त किए गए हैं? उनके विषय में संक्षेप में लिखिए।
उत्तर-'राम'अर्थात श्री राम,अयोध्या पति राजा दशरथ एवं महारानी कौशल्या के ज्येष्ठ पुत्र थे। वह स्वभाव से ही विनम्र, करुणामय,सदाचारी एवं आदर्श युवा थे। उनका विवाह जनक नंदिनी सीता से हुआ था अपने पिता एवं माता कैकई के वचनों का पालन करने के लिए वह चौदह वर्ष वनवास में रहे।वहां पर रावण ने धोखे से सीता जी का हरण कर लिया।तब श्री राम ने हनुमान जी, सुग्रीव ,जामवंत आदि की सहायता से रावण का वध कर डाला।
'वैदेही'शब्द सीता जी के लिए प्रयुक्त किया गया है। वैदेही अर्थात विदेह, राजा जनक की पुत्री सीता।कहा जाता है कि उनका जन्म धरती से हुआ था इसलिए उन्हें भूमिका भी कहते हैं। धनुष यज्ञ में श्री राम के द्वारा शिवजी का धनुष भंग किए जाने पर उनका विवाह श्री राम के साथ हुआ था।

(ख) प्रस्तुत पद में तुलसीदास किन्हे त्यागने के लिए कह रहे हैं और क्यों?
उत्तर-प्रस्तुत पद में कवि तुलसीदास जी ऐसे व्यक्तियों का साथ त्यागने की सलाह दे रहे हैं जो सीता जी तथा रामचंद्र जी को अपना प्रिय नहीं मानते हैं। जिस तरह राम भक्ति के कारण विभीषण ने अपने भाई रावण का तथा भरत ने अपनी माता कैकई का साथ छोड़ दिया था उसी प्रकार सभी को श्री राम की शरण में जाना चाहिए। कवि राम के अनन्य भक्त हैं। उनके अनुसार केवल राम का नाम ही है जो हमें भवसागर के पार उतार सकता है।

(ग)'नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहां लो' पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-'नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहां लो' पंक्ति का अर्थ यह है कि जो राम से नाता रखता है अर्थात प्रभु श्री राम की भक्ति करता है वही व्यक्ति हमारा प्रिय और सुहृदय होना चाहिए। तुलसीदास जी का कहना है कि ऐसे अंजन को लगाने से क्या फायदा जो आंख ही फोड़ दे अर्थात उस व्यक्ति को अपना मित्र बनाने से क्या फायदा जो हमारा जीवन ही बर्बाद कर दे।

(घ)निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए ।
सुहृद, सुसेव्य,अंजन, सनेह
उत्तर-सुहृद- संबंधी, प्रियजन
सुसेव्य- आराधना करने योग्य
अंजन- सुरमा, काजल
सनेह- प्रेम

(ङ)प्रस्तुत पद का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर-तुलसीदास जी कहते हैं कि राम-सीता से प्रेम न करने वाले व्यक्ति से हमें अपने संबंध तोड़ देने चाहिए। यहां कवि ने प्रहलाद, विभीषण, भरत तथा ब्रजनारियों के उदाहरण दिए हैं। हमें राम से प्रेम करना चाहिए इसी में हमारी भलाई है।

LESSON-8(भिक्षुक)

प्रश्न 3- " वह आता-
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता ।
पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को
मुंहफटी पुरानी झोली को फैलाता-
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।"

(क) दो टूक कलेजे के करता से कवि का क्या तात्पर्य है? समझा कर लिखिए।
उत्तर-'दो टूक कलेजे के करता 'से कवि का तात्पर्य उस भिखारी द्वारा अपना मन छोटा कर देना है । वह अपनी दयनीय अवस्था को सोचकर अत्यंत दुखी हो जाता है। कवि भी उसको देखकर उदास हो जाते हैं। जब वह भिखारी भोजन पाने के लिए अपनी फटी झोली फैलाए लोगों की ओर याचनामयी दृष्टि से देखता हुआ एक गली से दूसरी गली की ओर जाता है तो वह अंदर ही अंदर टूट जाता है। वह अपने भाग्य पर पछताता है।उसे देखकर कवि का हृदय भी आहत हो जाता है।

(ख)'लकुटिया टेक' से क्या तात्पर्य है?लकुटिया टेक कर कौन चल रहा है और क्यों ?
उत्तर-लकुटिया टेक से तात्पर्य है -लाठी का सहारा लेना ।लाठी का सहारा लेकर एक भिखारी चल रहा है। वह बहुत ही दुर्बल एवं अशक्त हो गया है। कई दिनों से भूखा होने के कारण वह चलने में भी असमर्थ है इसलिए वह लाठी का सहारा लेकर चल रहा है।

(ग)"पेट पेट दोनों मिलकर हैं एक" पंक्ति से क्या तात्पर्य है?
उत्तर-"पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक"पंक्ति से तात्पर्य है कि भिक्षुक कई दिनों से भूखा है इसलिए उसका खाली पेट पीठ से मिला हुआ प्रतीत होता है।

(घ)भिखारी क्यों पछताता हुआ आ रहा है ?
उत्तर-भिखारी भूख के कारण बहुत कमजोर हो गया है ।कोई भी उसे अन्न का एक दाना भी नहीं दे रहा है। वह अपनी इस दयनीय स्थिति पर दुख व्यक्त करता हुआ पछताता हुआ चला रहा है। साथ ही उसका परिवार भी है। अपने परिवार का लालन पालन करना उसकी ज़िम्मेदारी है जिसमें वह असमर्थ है । इन्हीं सब कारणों से भी वह पछता रहा है।

EXTRA QUESTIONS,LESSON-8(BHIKSHUK)

(1)भिक्षुक कविता का केंद्रीय भाव लिखें।
उत्तर-भिक्षुक कविता के माध्यम से कवि ने भीख मांगते हुए एक भिखारी तथा उसके दो बच्चों की दयनीय दशा एवं व्यवस्था का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।भूख के कारण उस भिखारी का शरीर अत्यंत दुर्बल हो गया है।उसका पेट जैसे उसकी पीठ से चिपक गया है।अपनी तीव्र भूख को मिटाने के लिए वह मुट्ठी भर दाने के लिए भीख मांगता चल रहा है।उसके साथ उसके दोनों बच्चे भी हैं।भूख से बिलबिला रहे हैं।बच्चे सड़क पर पड़ी जूठी पत्तल चाट रहे हैं और उनसे उस पत्तल को छीन लेने के लिए गली के कुत्ते भी तत्पर हैं।इस दशा को देखकर कवि के मन में उसके प्रति सहानुभूति एवं संवेदना जाग उठती है। वे शपथ लेते हुए कहते हैं कि वे उनके दुख दर्द को हरने का निरंतर प्रयास करते रहेंगे।

(2)अभिमन्यु की कथा का वर्णन कीजिए।
उत्तर-पांडु पुत्र अर्जुन के पुत्र का नाम अभिमन्यु था।महाभारत के युद्ध में वह चक्रव्यूह को भेदने के लिए गया था।सात महावीर योद्धाओं से लड़ते हुए मात्र सोलह वर्ष की अवस्था में वह वीरगति को प्राप्त हुआ था जिसकी वजह से वह अमर हो गया था।

LESSON-9(चलना हमारा काम है)

प्रश्न 4."कुछ कह लिया,कुछ सुन लिया
कुछ बोल अपना बंट गया
अच्छा हुआ तुम मिल गईं
कुछ रास्ता ही कट गया ।
क्या राह में परिचय कहूं ,

राही हमारा नाम है
चलना हमारा काम है।"

(क)'बोझ' शब्द से क्या आशय है? कवि इस बोझ को किस तरह बांटना चाहते हैं?
उत्तर-वह शब्द का अर्थ है- 'भार'। हमारे सिर, कंधों अथवा पीठ पर रखा गया बोझ हमें थकान का आभास कराता है। यहां पर 'बोझ' शब्द का अर्थ जीवन के कर्तव्य- मार्ग में आने वाली बाधाओं एवं मुसीबतों से है जो लक्ष्य प्राप्ति में हमारे लिए रुकावट बन जाती हैं।
इस बोझ को कभी दूसरों के साथ मिलजुल कर कम करना चाहते हैं। वह कहते हैं कि जीवन के रास्ते में मिलने वाले यात्रियों के साथ अपने सुख-दुख को साझा करके हम अपने बोझ को हल्का कर सकते हैं। कहा भी गया है कि सुख बांटने से बढ़ते हैं और दुख बांटने से कम हो जाते हैं।

(ख)कवि का रास्ता किस प्रकार कट जाता है? रास्ता कटने का क्या अभिप्राय है?
उत्तर-रास्ता कटने से अभिप्राय आराम से यात्रा करने से है। जब यात्रा आराम से तय होती है, मुसीबतों से कम सामना होता है तब यह कहा जाता है कि रास्ता कट गया।
कवि को भी जब जीवन के पथ पर संगी साथी मिल जाता है तो उसके मिलने से, उसके साथ चलने से और अपना सुख दुख बांटने से, उन दोनों के रास्ते आसान हो जाते हैं।

(ग)कवि उस साथी को अपना परिचय किस प्रकार देते हैं? इससे कवि के विषय में क्या ज्ञात होता है?
उत्तर- कवि अपनी जीवन यात्रा के मार्ग में मिलने वाले उस साथी को अपने परिचय के बारे में कहते हैं कि वह रास्ते में अपना परिचय क्या कह कर अथवा किस प्रकार दें। बस वे उनके बारे में यह जान लें कि उनका नाम 'राही' है क्योंकि वह(कवि) जीवन पथ पर चलने वाले एक मुसाफिर ही तो हैं। कवि की इस बात से उनके विषय में पता चलता है कि वह सरल स्वभाव के हैं।उनके स्वभाव में सादगी होने के साथ-साथ एक तरह की मस्ती भी है। वह बातूनी भी नहीं है ।मार्ग में साथी के मिल जाने पर भी वह न तो रुकते हैं और न ही बातों में लग जाते हैं।अपना संक्षिप्त परिचय देकर वह उसे अपने साथ लेकर पुनः जीवन के पथ पर आगे बढ़ जाते हैं। इससे यह भी ज्ञात होता है कि अपनी यात्रा तथा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह बहुत गंभीर हैं और बिना किसी बाधा के वह उसे पूरा करना चाहते हैं।

(घ)जीवन पथ पर चलने के लिए कवि क्या सुझाव एवं सलाह दे रहे हैं?
उत्तर-जीवन के रास्ते पर चलने के लिए कवि ने हमें अनेक अमूल्य सुझाव दिए हैं।कवि कहते हैं कि जब प्रकृति ने हमारे पैरों में गति दी है तथा हमारे तन और मन में पर्याप्त इच्छाशक्ति दी है तो जीवन पथ पर अपनी मंजिल प्राप्त होने तक हमें निरंतर चलते रहना चाहिए। चाहे कैसा भी अवरोध आए,कहीं किसी स्थान पर नहीं रुकना चाहिए।जब तक हमें =अपनी मंजिल नहीं मिल जाती तब तक हमें रास्ते में विश्राम करने के लिए भी रुकना नहीं चाहिए क्योंकि जीवन निरंतर चलते रहने का दूसरा नाम है।निरंतर चलना ही हमारा काम है।

EXTRA QUESTIONS,LESSON-9(CHALNA HAMARA KAM HAI)

(1)प्रस्तुत कविता का उद्देश्य लगभग 50 शब्दों में लिखिए।

उत्तर-प्रस्तुत कविता का मुख्य उद्देश्य मानव को विघ्न बाधाओं पर विजय प्राप्त करते हुए निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देना है।कवि के अनुसार गति ही जीवन है।जीवन में सफलता- असफलता, दुख-सुख आते रहते हैं।जीवन की राह में हार-जीत तो लगी रहती है, अतः सभी परिस्थितियों में समभाव रखते हुए हमें निरंतर गतिशील रहना चाहिए क्योंकि चलना हमारा काम है।जीवन एक सफ़र है।मनुष्य को बिना किसी से कोई शिकायत किए सब तरह की परिस्थितियों को ईश्वर की देन समझकर जीवन पथ पर प्रगति की राह पकड़ कर निरंतर चलते रहना चाहिए।

LESSON 10(MATRUMANDIR KI AUR)

(1)"ना होने दूंगी अत्याचार ,चलो मैं हो जाऊं बलिदान
मातृ मंदिर में हुई पुकार,चढ़ा दो मुझको हे भगवान।। "

(क) इन पंक्तियों में आपके विचार से बलिदान की पुकार का वास्तविक स्रोत क्या है और किस प्रकार के बलिदान का आह्वान किया गया है?
उत्तर-इन पंक्तियों में हमारे विचार से बलिदान का वास्तविक स्रोत है अपनी धरती माता को अत्याचार से मुक्त कराना।जो अत्याचार उस समय हमारी धरती माता पर अंग्रेज कर रहे थे। यहाँ उस अत्याचार को दूर करने के लिए कवयित्री अपने प्राणों तक का बलिदान करने का आह्वान कर रही हैं।यह बलिदान करने के लिए वह स्वयं भी तैयार हैं और दूसरों को भी प्रेरित कर रही हैं।

(ख)मातृ मंदिर किसका प्रतीक है? समझाकर लिखिए।
उत्तर-मातृमंदिर भारत माता की धरती का प्रतीक है।कवयित्री के अनुसार अंग्रेजों के अत्याचार के कारण हमारे देश की धरती व्याकुल हो रही है।परतंत्र भारत में विदेशी बहुत अधिक अत्याचार करते थे और जो देशभक्त उनका विरोध करता था उसे राजद्रोही बता कर जेल में डाल दिया जाता था।सभी कष्टों को,अत्याचारों को देखते हुए कवयित्री देशवासियों को मातृ मंदिर की ओर चलने का आह्वान कर रही है जिससे देशवासियों में जोश भर जाए और वे अंग्रेजों के अत्याचारों से अपनी धरती माता को मुक्त करा सकें।

(ग)"चढ़ा जो मुझ को हे भगवान" से कवयित्री के क्या भाव व्यक्त होते हैं?
उत्तर-"चढ़ा दो मुझको है भगवान" से कवयित्री यह भाव व्यक्त करना चाहती हैं कि अब उनसे अपनी धरती माता पर और अधिक अत्याचार होते नहीं देखे जा रहे हैं।अब तो वह किसी भी प्रकार से अपनी धरती माँ को इस मुश्किल की घड़ी से स्वतंत्र अवश्य कर आएंगी।इसके लिए भले ही उन्हें स्वयं का बलिदान ही क्यों ना देना पड़े।कवयित्री को इस बात का अहसास है कि उसकी धरती माता उसको बुला रही है। इसलिए वह अपनी धरती माता को बचाने अवश्य जाएंगी।

(घ) प्रस्तुत पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।
उत्तर-कवयित्री स्वयं मातृभूमि के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने के लिए तत्पर हैं। कवयित्री को भारत मां के मंदिर से माँ की पुकार स्पष्ट सुनाई दे रही है। वह ईश्वर से प्रार्थना कर रही है कि वह उन्हें स्वयं को उस पुकार पर समर्पित करने की शक्ति दें।

EXTRA QUESTIONS, LESSON 10(MATRUMANDIR KI AUR)

1.'मार्ग के बाधक' से क्या आशय है? बाधक किन को कहा गया है और क्यों?
उत्तर-'मार्ग के बाधक' से आशय है- रास्ते में आने वाली 'रुकावटें,बाधाएँ' जो कि मंज़िल तक पहुंचने के मार्ग को कठिन बनाती हैं।यहाँ पर 'बाधक' 'अंग्रेज सैनिकों' को कहा गया है। मातृ- मंदिर (देशभक्तों के संघटन) तक पहुंचना आसान नहीं है क्योंकि रास्ते में खड़े विदेशी प्रहरी दर्शनार्थियों को आगे नहीं बढ़ने देते। उनका रास्ता रोक कर खड़े हो जाते हैं।

2. शब्दार्थ
व्यथित-दुखी,हृदयप्रदेश-हृदय रूपी प्रान्त(मन का आंगन), भार-बोझ,पद पंकज-कमल रूपी चरण, नयन जल-आंखों का पानी,दीन-दुखी,दुर्गम-अगम्य,मार्ग-पथ